शोकसभा

स्वरुप एवं पध्दती

लेखक

प्रा. डॉ. मधुकर क्षीरसागर

अनुवाद

प्रा.डॉ. नितीन कुंभार

हिंदी विभाग,

धारुर महाविद्यालय, किल्ले धारुर,

ता. किल्ले धारुर जि. बीड.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

शोकसभा स्वरुप एवं पध्दती

© डॉ. मधुकर क्षीरसागर, प्रा.डॉ. नितीन कुंभार

❖ **Publisher :**
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed (Maharashtra)
Pin-431126, vidyawarta@gmail.com

❖ **Printed by :**
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
www.vidyawarta.com

❖ **Page design & Cover :**
Shaikh Jahuroddin,Parli-V

❖ **Edition: June 2020**

ISBN 978-81-945173-1-3

❖ **Price : 199/-**

All Rights Reserved, No part of this publication may be reproduced, or transmitted, in any form or by any means, electronic mechanical, recording, scanning or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner. Responsibility for the facts stated, opinions expressed. Conclusions reached and plagiarism, If any, in this volume is entirely that of the Author. The Publisher bears no responsibility for them. What so ever.Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

❑ विषयसुची ❑

अ. क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्र.
१.	प्रस्तावना	४
२.	शोकसभा : परिभाषा, अर्थ एवं संकल्पना	१६
३.	शोकसभा : स्वरुप एवं अंतरंग :	२८
४.	शोकसभा : इतिहास एवं परंपरा	३८
५.	शोकसभा आयोजन की पध्दती	४८
६.	शोकसभा आयोजन संदर्भ के कुछ पारंपरिक संकेत	५९
७.	उपसंहार	६६
	संदर्भ ग्रंथ	७१

१. प्रस्तावना

शोकसभा शब्द उच्चारण के साथ साथ ही मन में एक नीरस दु:ख एवं शोकप्रद स्वानुभव प्रकट होता है। इस प्रकार के कार्यक्रम (समारोह) को उपस्थित रहना अक्सर टाला जाता है। और इस विषय पर ग्रंथ लेखन तो एक अत्यंत दुर्लभ है। किंतु यहाँ पर निर्भीड होकर इस दुर्लक्षित विषय की तरफ वाचक एवं, अनुसंधानकर्ता, संचालक, कार्यकर्ता एवं जिज्ञासु प्रवृत्ती के लोग आदि का लक्ष्य आकर्षित हो इस कारण ही ग्रंथ निर्मिती का प्रयत्न किया है।

इस ग्रंथ का निर्माण शोकसभा ऐसी ही होनी चाहिए यह कहेना का तात्पर्य नही है किंतु औचित्य, समय का महत्व जानना जरुर है इस कारण दिग्दर्शित किया है। ग्रंथ की व्याप्ती बहूत है। हर एक शोकसभा एक स्वतंत्र रुप से ग्रंथ बन सकता है, किंतु सिर्फ सांकेतिकता प्रकट की है। नाममात्र शोकसभा का एक विचार करना यही अत्यंत विनम्र प्रयत्न है।

हाल ही में अनेक शैक्षिक संस्था, समाजसेवी संस्था, विभिन्न पक्ष संगठनों के संस्थापक, प्रवर्तक का निधन होने के पश्चात गांव, तहसील, जिला आदि ठिकाणो पर शोकसभा का आयोजन करते ने जिम्मेदारी किसी अध्यापक, स्कुल का संचालक, अनुयायी, शिष्य, कार्यकर्ता आदि पर आती है। कहाँ? कैसे? कब? आयोजन किया जाये, किस को

आमंत्रित करे, शोकसभा में क्या होना चाहिए क्या नहीं होना चाहिए आदि की चर्चा शुरु होती है और फिर सब मार्गदर्शन करते है और कैसे समय की पूर्ती की जाती है। आयोजक के प्रामाणिक कष्ट की ओर ध्यान नही देता किसी छोटीसी गलती की पूरी जिम्मेदारी आयोजक की ही मानी जाती है। कोने में बैठकर चर्चा करना ही धन्यता मान बैठते है।

इस समय आयोजक को शोकसंविग्न मानसिकता से थोडी भी सहाय्यता मिल सके तो इस ग्रंथ की एवं कष्ट सार्थकता होगी।

शोकाकुल कार्यकर्ता को थोडासा विनम्र, शांत होने मे सहायता मिले या योग्य दिशा मिले, थोडे समय में शोकसभा का आयोजन हो सके, परेशानी ना हो, यह भी यशस्वी हुआ तो ग्रंथ लेखन का यश मिल सकेगा।

आयोजको को किसी कार्यक्रम का आयोजन करना यह एक समस्या लग रही है। प्रमुख अतिथी कोन ? अध्यक्ष कोन ? सूत्रसंचालक कोन ? आभार कोन करेगा ? कोन क्या बोले? कैसे बोले? आदि प्रश्न उत्पन्न होते है। फिर अकेला आयोजक तो वे रुब नही कर सकता उस समय उसके साथ जो कार्यकर्ताओं का संचय होता है उन्ही कां सक्रिय सहभाग लेना आवश्यक ही है।

शोकसभा आयोजित करना, वृत्तपत्र में उसे प्रसिध्दी देना, स्मरणिका में उसका उल्लेख करना ऐसे कार्य आवश्यक होते है। किसी प्रसिध्द व्यक्तीपर, या जीवनपर आधारित लघुचित्रफित तैयार करना तब यह सामुग्री उपयुक्त होती है। उसकी देखभाल इस कारण आवश्यक होती है।

समाज में एक प्रथा का उन्नयन हो गया है। शोकसभा कारण व्यक्ति के मूल्यमापन एवं कर्तृत्व की चर्चा जनसमाज में होती है। यहाँ पर मूल्यमापन कर के मृत व्यक्ति को दोष देना नही है यह बात ध्यान में रखना जरुरी है, इस कारण प्रस्तावना में इतना बहुत है।

शोकसभा का आयोजन यह प्रेरणा ही भारतीय संस्कृती में महत्वपूर्ण है। इस कारण प्रस्तावना में संक्षिप्त रुप में चर्चा करना ही आवश्यक है।

शोक प्रकटीकरण, सामाजिक एवं धार्मिक संकेत :-

शोक प्रकट करते समय किसी मृत व्यक्ती के संबंधित शोक, इस अंत्यविधी को प्रारंभ करने से पहले व्यक्त करना, रोना, मन को हलका करना, प्यारी यादे याद करनी, किंतु प्रेत को स्नान करते समय, कपडे पहनाते समय, क्षौर करते समय, प्रेत को

ले जाते समय, खुद समशान मे अथवा नदी में स्नान करते समय, पिंडदान समय, विधी समय शोक करना नही। विधी की ओर ध्यान दे। पुरोहित, उपाध्याय, क्षेञोपाध्याय जो कह ले उसी प्रकार से विधी करना। जन्म और मर्तिका के विधी संपूर्ण विश्व मे सभी धर्म, पंथ, संप्रदाय उनकी पध्दती से करते है। उस समय शोक करना जल्दी नहीं है।

रिश्तेदार जब मिलने के लिए आते है तब शोक करना स्वाभाविक है। कुछ यादे शोक उत्पन्न करनेवाले होती है किंतु समाज में श्रेष्ठ पुरुष, विद्वान व्यक्ती, संत-सत्पुरुष, यती-संन्यासी, महानुभाव ऐसे व्यक्ती मिलने के लिए आते है तब बाते शांतपूर्ण सुने। सांत्वनपर शब्द जीवन को प्रेरणा देनेवाले होते है। उस प्रसंग शोक प्रकट करना अच्छा नहीं है। हम अगर उनके समुख रोते हुए बैठे तो आनेवाले श्रेष्ठ व्यक्ति का वह अनादर होगा। इस प्रकार से सामाजिक एवं धार्मिक संकेत ध्यान में ले हुए मृत व्यक्ती संबंधी शोक प्रकट करना है।

श्रीमद्भगवद्गीता मे भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है -

"अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्व भाषसे।

गता सूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।।" (अ.२, श्लोक ११)

ऐसा कहा गया है -घटित घटनाओका पंडित, विद्वान लोग शोक व्यतीत नहीं करते इस संविधीत भाष्य करते हुए संत श्रेष्ठ ज्ञानेश्वर महाराज कहते है -

"देखे विवेकी जे होती।

ते दोन्हीतेही न शोचती।

जे होय जाय हे भ्रांती।

म्हणऊनिया।।" (अ.२. ओवी १०२)

जन्म और मृत्यु दोनो के बारे में शोक करना उपयुक्त नहीं है। विवेकी पुरुष ने शोक करना नहीं चाहिए। सब मृत्य है। मैं भी मृत्य होनेवाला हूँ। यह सब घटित होने जा रहा है। इस कारण चिंतित बैठना यह कौनसा ठीक है। किसी कारण भ्रांतयुक्त शोक करना योग्य नहीं है यही सच है।

श्री भावार्थ रामायण में वर्णित शोकवर्णन -

श्री भावार्थ रामायण यह संत एकनाथ महाराज का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं संपूर्ण महाराष्ट राज्य में जिस ग्रंथ की प्रसिध्दी है एवं महाराष्ट्र राज्य के प्रत्येक मारुती मंदीर मे वाचन किया गया है ऐसा यह समाजयोग्य, समाजमान्य, लोकप्रिय एवं रामायण कां संस्कार किया जानेवाला ग्रंथ है।

इस ग्रंथ के दुसरे खंड में युध्द कांड कें ४४ अध्याय में जिस लक्ष्मण को शक्ति लगकर मूच्छा आती है तब प्रभू श्रीराम ने सुषेणा के पास शोक व्यक्त किया है। वो शोक सही अर्थ में शोक की परीसीमा व्यक्त करनेवाला है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने इस प्रसंग व्यक्त किया शोक संत एकनाथ इस प्रकार वर्णन करते है।

"बुडाले धैर्य वीर्य। बुडाले माझे परमशौर्य।
बुडाले यश सर्व। बंधु स्वयमेव अंतरला।।११।।
बुडाली माझी धृति कीर्ती। बुडाली माझी शौर्यशक्ती।
बुडाली माझी परमख्याती। बंधु निश्चिती अंतरला।।१२।।
नेञां येतसे अंधारी। गाञे कांपती थरथरी।
धनुष्य न धरवे करी। धीर निर्धारी न धरवे।।१३।।
प्राण जाती विकळ। मति न स्मरे अळुमाळ।
वाचा जातसे बरळ। शरीर चळचळ कांपत।।१४।।
आता मज युध्दाचे कार्य कोण। यश कोण घे आपण।
कोण कार्य वधून रावण। बंधु लक्ष्मण अंतरला।।१५।।
चाड नाही विजयवृत्ती। चाड नाही धृतिगती।
चाड नाही यशकीर्ती। बंधु निश्चिती अंतरला।।१६।।
जीविताची चाड कोण। उभ्याच मी सांडीन प्राण।
या जिण्याचे सुख कोण। बंधु लक्ष्मण अंतरला।।१७।।
धाव पाव रे लक्ष्मणा। का करितोसी प्रयाणा।
मज सोडोनि दीनवदना। कोण्या स्थाना जातोसी।।१८।।
वनी मी पीडलासी रे उपवासी। म्हणोनिया जासी विसांवया।।१९।।
इंद्रजितासारिखा रणयोध्दा। रणी श्रमलासी तूं करितां द्वंद्वां।
की सीता बोलली अपवाद। त्या विषादा२ मानिले।।२०।।
लक्ष्मणा ये रे ये रे। परतोनि मज भेटी दे रे।
मजवरी रुसलासी का रे। दोघेही वनीचे सांगाती।।२१।।
न करी अयोध्यागमन। उभ्यां प्राण सांडीन।।२२।।
सीता न लगे मज सर्वथा। काय तोंड दाखवू त्या भरता।
काय उत्तर देऊं तिघी माता। बंधु सर्वथा अंतरला।।२३।।
शञुघ्न मज पुसेल जेव्हा। काय मी मुख दावू तेव्हा।

गेला सर्व सुखाचा ओलावा। जीवी जीवा आकांत।।२४।।
म्हणवोनि घातली लोळणी। अंग टाकिले धरणी।
लक्ष्मणे मोकलिलें रणी। कोण शिराणी जिण्याची।।२५।।
वक्षःस्थळ पिटी हाते। डोयी पिटी धरणीते।
विकळ जाता सर्व सामर्थ्ये। सुषेणें तेथे धरियेले।।२६।।"

(श्री भावार्थ रामायण-संत एकनाथ)

इस शोकवर्णन पढने के पश्चात किसी भी सहृदय वाचक को शोक निर्माण हुए बगैर नहीं रहेगा। श्रीराम ने बंधु विरह का शोक भारतीय जीवन में बंधु प्रेम का निर्माण करनेवाला है। संत एकनाथजी ने शोक में आवश्यक महत्वपूर्ण बाते यहाँ पर व्यक्त किया है। जैसे जन्मदाती को क्या लगेगा, भाईओ क्या लगेगा सामान्य जनता के मुख का भाव वे इस जगह पर प्रकट करते है और इस कारण यह शोक अत्यंत परिणामकारक है।

इसी प्रकार संत एकनाथजी ने सीता विलाप इस उत्तरकांड में ४८ वे अध्याय मे व्यक्त किया है। वे भी हम यहाँ पर अध्ययन करनेवाले है। श्रीराम का वियोग होने पश्चात जिस समय लक्ष्मण उन्हे बन में लेकर छोडते है उस समय आश्चर्यचकित, शोक से व्याकुळ हुई सीता हिन वचन अपना शोक व्यक्त करती है -

"जनकात्मजा म्हणे सुमित्रासुता। माझे शरीर दुःखाते तत्वतां।
ऐसे जाणोनि की विधाता। दुःखासी पात्र मज केले।।४।।
पूर्वी जैसे आपण केले। कोणा स्त्रीपुरुषा असे विघडिले।
तरी मज हे प्राप्त झाले। वनवासासी सांडिले श्रीरामे।।५।।
ऐसा जाणेनिया वृत्तांत। वनी मज त्यागी श्रीरघुनाथ।
माझे पाप मजचि फळत। वियोग होत श्रीरामी।।६।।
जन्मापासोनिया जाणा। हेंच मज प्राप्त ऊर्मिलारमणा।
तरी अदृष्टचि प्रमाणा। बोल कवणा ठेवावा।।७।।
पूर्वी मी श्रीरामभवनी। करीत असता सेवा चरणी।
मज गृही अनुदिनी। दुःख थोर जाहले।।८।।
पुढे आता ऋषिआश्रमस्थानी। वसता मज पुसतील मुनी।
काय कारण तुजलागोनी। श्रीरामे वनी सांडिले।।९।।"

शोक एवं दुःख विधाताने मुझे ही क्यों दिया। पूर्व जन्म हमने किस स्त्री पुरुष का विघटन किया है क्या ऐसा लग रहा है। अब मुझे हर एक की श्रीराम ने किस कारण

तुझे त्याग दिया है। कोनसा अधर्म मेरी ओर से हुआ है, यह मेरे समझ में नहीं आ रहा है, आगे उस बन में शोक कर रहा है किस अन्याय के कारण यह पीडा, दु:ख मेरे हिस्से में है, यह उसे समझ नहीं आया। उसके इस अद्‌भूत शोक का वर्णन मुझे तो हो नही रहा ऐसा भी संत एकनाथ कहते है - उसका शोक देखते ही पृथ्वी और पक्षी भी रुदन कर रहे है, ऐसा शोक उसने व्यक्त किया है।

इन्ह दोन्हों भी शोकवर्णनों मे संत एकनाथजीने सामाजिक संकेत, धार्मिक संकेत व्यक्त करते हुए शोक वर्णन किया है। इस कारण यह शोकवर्णन अत्यंत प्रभावी नजर आते है। शोक का अर्थ हमें अच्छा समझ सके इस कारण यहाँ पर व्यक्त किया है।

नैतिक कर्तव्य की ईच्छा :-

शोकसभा आयोजित करके व्यापक समूह को दु:ख में समाकर लेने इस क्रिया को व्यक्ती से संबंधित आदर, प्रेम, स्नेह की वापसी करने के लिए ऋण से निकलने के लिए एक नैतिक कर्तव्य जिसे शोकसभा का रुप कहा जाता है।

कर्तव्य पूरा करना यही विवेकीपण का लक्षण है। भारतीय जीवन में श्रेष्ठ महानुभाव संबंधित आदर व्यक्त करते समय कर्तव्यविन्मुख होना परंपरागत नैतिकता को शोभा नहीं देता, बौध्दिक, सामाजिक कार्य की गिनती करके बताया नहीं जा सकता इस कारण इतनें ऋण में ने किया है यह कह नही सकते तो पूरा जीवन ही ऋण रहता है; इस कारण कर्तव्य पूरा करना आवश्यक है। शोकसभा को उपस्थित होना यह भी एक सामाजिक कर्तव्य है। इस कारण नैतिक, सामाजिक जिम्मेदारी संभालकर कर्तव्य कर्म का एक व्यापक दृष्टिकोन रखकर शोकसभा में सहभागी होना आवश्यक है।

शोक; दुख : पञ्र लेखन :-

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज इनके ग्रामगीता में अंत्यसंस्कार इस विषय २२ वे अध्याय में उन्होने विश्लेषण रुप से विश्लेषित किया है। मृत संस्कार के पश्चात अपने पास इस दिन का (सुतक)...होता है। इस विषय पर वे कहते है ...

"सुतक धरण्याची प्रथा लविली।
ही तर शोकवृत्तीचं दाविली।
आड येतील ती काढून टाकिली।
पाहिजेत ऐसी बंधने।।" (ओ.३८ अ. २२)

...(सूतक) रखने की आवश्यकता नही है वे एक रुढी, परंपरा है। अब वे संदिग्ध लग रही है तो वे छोड भी सकते है ये सब आरोग्य हित रक्षणार्थ रखी जाती थी

ऐसा वे कहते है-

"गोमूत्र शिंपडणे, निंब खाणे।
प्रेतासि अग्निसंस्कार देणे।
सुतक अस्पर्शता पाळणे।
आरोग्यासाठी सर्व हे।।" (अ.४१, अ. २२)

...(सूतक) यह आरोग्य हितार्थ है। अग्निसंस्कार होने पश्चात...(सूतक) ही जरुरत नही है ऐसा वे मानते। इस...(सूतक) एवं मृत व्यक्ती की अन्य समुदाय को जानकारी मिले, रिश्तेदार और बिरादरी समझे इस कारण पत्रव्यवहार किया जाए। जिस कारण ऐसी घटनाओं की रचना अन्य लोगों को मिले। शोक पत्रलेखन का एक स्वरुप परिशिष्ट में दिया गया है। यहाँ पर राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व्यापक समाजपयोगी का एक प्रत्यय ही वे कहते है-

"शोकवार्ता सकळांसि कळावी।
म्हणोनि एकदा पत्रे टाकावी।
यापरी सुधारणा करावी।
समाजाची।।" (अ.२२, ओवी ४४)

समाज में अगर सुधार लाना है तो शोकवार्ता सभी लोगो को...(सुतकात्वाचे) पत्र भेजना जरुरी है। पत्र/संदेश भेजने पश्चात सभी लोगो को वार्ता समझ लगेगी और वे जरुरी भी है।

आधुनिक युग में संचार पध्दती में बदलाव आया है। फोन, मोबाईल फोन के माध्यम से/मदत से सभी रिश्तेदारों को वार्ता देना सुलभ बन गया है। मोबाईल तो प्रत्यक्ष रुप से प्रत्येक व्यक्ती को संदेश दे सकते है। इसके साथ-साथ एस.एम.एस. (संदेश सेवा) पर भी सुलभ है। ई-मेल अगर उपलब्ध है तो उसपर भी दे सकते है। इसकारण पत्र के साथ साथ आप नवनवीन माध्यमों का प्रयोग, उपयोग कर सकते है।

मृत्यू का उचित समय :-

आदिकाल से मनुष्य के मन में मृत्यु समय किस प्रकार के विचार उत्पन्न होते है यह जिज्ञासा की प्रवृत्ती उत्पन्न हमेशा से होती आ रही है। मृत्यु समय जिस प्रकार की भावना मन में आती है उसी प्रकार से उत्पन्न जन्म उसे मिलता है ऐसा वे कहते है। मृत्यु समय अगर निश्चित है तो मनुष्य जाति ने देवी- देवताओ का चिंतन करना चाहिए, पवित्र ग्रंथ पठन-पाठन,चिंतन करना चाहिए ऐसा कहते है। मृत्यु समय सीमा करीब आई

है ऐसा जब लगता है तो ब्राह्मण समाज देहातो में गरीब लोगों को अन्न, धन-धान्य, वस्त्र, एवं द्रव्य आदि दान स्वरुप में देते थे। ऐसा करने से मृत्यु अच्छी होती है ऐसी एक लोकभावना, लोकमानस था। किंतु आज की समय के नुसार घर मृत्यु आना अनिश्चित बन गया है। किंतु मृत्यु का उत्तम समय कोनसा है इस बारें मे भगवतद्गीता में भी अग्नि, ज्योती, दिन, शुक्लपक्ष एवं उत्तरायण के छः माह ऐसे समय मृत्यु लोग ब्रह्मपद के लिए पात्र है ऐसा कहते है। और धुआ, रात, कृष्णपक्ष एवं दक्षिणायण के छे: माह ऐसे समय मृत्यु व्यक्ती, मनुष्य को पुनः जन्म प्राप्त होता है। ऐसा कहते है की ऐसे समय मृत्यु अगर हो गई तो बार-बार जन्म मृत्यु के चक्र से गुजरना पडता है। या याज्ञवल्क्य स्मृति में इन सारे मार्गा को देवयान एवं पितृयान ऐसा कहा गया है। इस कारण मृत्यु का समय योग्य हो इस कारण से यहां पर व्यक्त किया है।

अब के समय हर एक को किसी भी प्रकार की व्याधी न होते हुए मृत्यु आना पसंद है। सच तो यह है कि अपनी मृत्यु से अन्य किसी को भी चिंता या मन में अपनी मृत्यु के विचार आना ऐसी मृत जीवन व्यतीत करना आवश्यक है। इस कारण मृत्यु अच्छी हो, जो की अन्य लोगो की लिए मर कर भी जीवित समान है। इस कारण मृत्यु के समय की चर्चा और विचार यहा पर संक्षिप्त रुप में किया है। और वे आदर्श जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरणादायी होगा।

अत्येष्टि विधी :-

मृत देह का विसर्जन करने का यह विधी है। सोलाह संस्कार में यह एक है। ये अंतिम संस्कार होने से कारण इसे महत्व प्राप्त हुआ है। हर एक जाती बिरादरी में जन्म के समय और मृत्यु के समय विधी बताये है।

मृत देह की व्यवस्था विभिन्न मार्गो से की जाती है जैसे दफन, दहन, पाणी में डुबाना, गिध्द जैसे पक्षी से खराब कर, सजकर, दहन करना आदि पध्दतियां दिखाई देती है।

अन्त्येष्टि में मृत देह को (जल) पाणी से स्नान करवा कर, नये वस्त्र पहनाकर, मस्तिक पर तिलक फुल लगाकर मुख में तुलसी पत्र, सोना, चांदी के मणी देकर, अरथी (तिरडी) पर रखकर (गुलाल) अबीर लगाकर सभी शोकमग्न अवस्था मे समशान लेकर चलते है। समशान में क्षौर कर्म किया जाता है यानि उसे मुंडण कहा जाता है। फिर जिस जगह पर दफन, दहन करना है उस जगह पर पाणी, छिडक कर, तीन लकीरे खीचकर, खोदे हुए जगह पर तिल डालकर, दर्भ, जल डाला जाता है। प्रेत पर घी को छोडा जाता

है। और साथ ही साथ (कणकेचे किंवा गव्हाच्या पीठाने) पिंड बनाकर वे मस्तिस्क, मुख, दो बाहू एवं हृदय इन्ह पाँच अवयवों पर रखे जाते है। चिता पूर्ण रचकर उसे अग्नि देते है। प्रेत को अग्नि का स्पर्श होते ही कंदे पर मट्टी का कुंभ लेकर दायी और से तीन चक्कर लगाकर वे कुंभ पूरी तरफ फोडा जाता है और तिल मिश्रित जल उस अश्मेमपर तीन बार तिलांजली देते है।

अंत्येष्टी विधी का परिचय स्थूल रुप से हो सके इस कारण प्रस्तावना में उल्लेख नाममात्र है।

समूह व्यक्त भावना आविष्कार :-

शोकसभा से व्यापक रुप में समूह भावना आविष्कार प्रकट होती है। समूह भावना हमे यहा प्रकट होती दिखाई देती है। शोकसभा के लिए उपस्थित लोकसमूह विभिन्न जाती, धर्म, आयु, पंथ एवं लिंग के होते है। उनकी व्यक्त अव्यक्त से मृत हुई व्यक्ति के बारे में मंतव्य प्रकट करते है। समूह को उनके बारे में सुख दु:ख, जीवनानुभव, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थिती, कार्य एवं जीवनध्येय का परिचय होता है। समूह की प्रत्येक व्यक्ती और मृत व्यक्ती के संबंध का आविष्कार यहां व्यक्त होता है इस कारण शोकसभा में प्रकटीकरण को विशेष महत्व है।

समूह व्यक्त भावना अमूर्त होती है किंतु ऐसी दु:खद अनुभवो को प्रकटीकरण में जब वे व्यक्त होते है तब अत्यंत तलस्पर्शी ऐसी भावना के प्रकट आविष्कार होते है। इस कारण समूह भावना व्यक्त होती है।

मृत व्यक्ती के जीवन ध्येय पर प्रभाव एवं परिणाम इस कारण समझ सकती है। इसी कारण समूह भावना आविष्कार को शोकसभा मे महत्व है।

श्रध्दा प्रकटीकरण :-

शोकसभा से मृत व्यक्ति के बारे में श्रध्दा प्रकट होती है। मृत व्यक्ति ने किये इस कार्य एवं उस परकी निष्ठा इसी कारण प्रकट होती है।

आधुनिक काल में श्रध्दा प्रकटीकरण से अनशन, आंदोलन, सत्याग्रह, गांधिगिरी ऐसे कार्यक्रम समूह में होते है। शोकसभा में श्रध्दा बढाने हेतू भी प्रकार होते है।

जैसे दर्शन श्रध्दा प्रकटीकरन मे घोषवाक्य, नारा, ललकारी आदि होते है।

व्याकुलता, दु:ख की तीव्रता, रोना, भाषण में व्यत्त्यय आना इस आधार पर दु:ख की तीव्रता व्यक्त करते है। उससे भी श्रध्दा प्रकट होती है।

किंतु सही श्रध्दा यह औपचारीक नही चाहिए। वे वैचारिक, कार्यान्वयी,

कृतिशील, प्रामाणिक, पथदर्शी, क्रांतदर्शी ऐसी अपने आप जागृत होना चाहिए। जिस कारण शोकसभा उस श्रध्दा, विचारधारा, परंपरा का संबंध अगली पिढी तक हम जोड सके तभी उसकी सार्थकता होगी।

शोकसभा का महत्व :-

शोकसभा का महत्व जिस कुटुंब की व्यक्ति मृत हुई है जिसके लिए इस शोकसभा का आयोजन किया है उसके लिए महत्वपूर्ण है। किन्तु उसके साथ उस कुटुंब के अन्य सदस्य के लिए भी महत्वपूर्ण है। कौटुंबिक एकता, विश्वास, आदर्श का एक संदेश निर्माण किया जाता है।

कुटुंब अंतर्गत छोटे लडके, स्त्रिया एवं लडकियां इनके भावनिकता का दर्शन होता है। उनको भावनिक आव्हान भी किया जाता है। भाव भावनाओं का प्रकटीकरण करने के लिए सहानुभूती होती है इस कारण कौटुंबिक वात्सल्य शोकसभा का महत्व कुटूंब के लिए ही है। कुटूंब जिस समाज का घटक है। उस समाज के लिए शोकसभा आवश्यक है। मृत व्यक्ति के कार्य, कृती, संदेश एवं जीवन दर्शन समाज के अन्य व्यक्तियों को उसका उपयोग हो उनके कार्य के सभी को परिचय हो, उनके जीवन एवं मृत्यु दोनो का समाज को अर्थ समझ आये, इस कारण शोकसभा महत्वपूर्ण है। समाज में मुत्सद्दी, ध्येयपूर्ण, सेवक, हितचिंतक ऐसे सभी समाजबांधव को शोकसभा महत्वपूर्ण है। मृत श्रेष्ठ व्यक्ति के शिष्य, छात्र, रिश्तेदार, अनुयायी, कामगार, कार्यकर्ता आदि के ऋण से मुक्त हो। कार्य का अनुकरन एवं कृती का आचरण, बौध्दिक, संकल्पना को जतन हो इस कारण शोकसभा होती है।

शोकसभा का शैक्षिक दृष्टी से महत्वपूर्ण है। संस्कृती की पहचान एवं संस्कारों का महत्व है। शोकसभा से उत्तरदायित्व का एक महत्वपूर्ण संस्कार सहभाग लेनेवालों पर होता है। इस कारण एक प्रकार का लोकशिक्षण, व्यवहार एवं वर्तन की शिक्षा यहाँ होती है।

संस्कृती यह एक ही समय पर भौतिक एव मनोमय ऐसा व्यापक कार्य करती है। अपनी श्रध्दा, विश्वास, परंपरा एक पिढी से दुसरी पिढीयों तक लेकर जाने का कार्य लोकसंस्कृती करती है। शोकसभा के कारण सांस्कृतिक समन्वय का कार्य होता है। संस्कृती रक्षण के लिए ऐसे कार्यक्रमों की जरुरत होती है। शोकसभा का यह संस्कार आगे की पिढी पर परिणाम एवं पथदर्शी होता है। इस कारण सांस्कृतिक दृष्टी से शोकसभा महत्वपूर्ण है।

धार्मिक दृष्टी से भी शोकसभा महत्वपूर्ण है। अंत समय रक्षा विसर्जन, पिंडदान, सपिंडी, काकस्पर्श आदि प्रसंग के समय एक प्रकार से कुटूंब सभा यह धर्मसभा हुई हमे नजर आती है। धर्मिकता से यह सभी चीजे महत्वपूर्ण होती है। इसी समय हर एक के मन मे उत्पन्न भावनाओ को प्रकट किया जाता है। इस कारण धार्मिक भावना महत्वपूर्ण होती है।

शोकसभा राजनिती दृष्टी से बहुत महत्वपूर्ण है। पक्ष बढाने हेतू, संघटन कार्यकर्ताओं के मन मे आदरभाव बढाने हेतू, निष्ठा प्रबल होने के लिए, भविष्य मे राजकीय स्थान प्राप्ती के लिए शोकसभा महत्वपूर्ण है। राजनिती व्यक्तियों को मृत व्यक्ति की कार्य को, राजकीय आशा आकांक्षाओं, स्वप्नपूर्ती को निर्देशित करने के लिए एव अन्य पक्ष संघटनाओ सदस्य के लिए आवश्यक ऐसा होता है इस कारण शोकसभा यह राजनीति दृष्टी से महत्वपूर्ण है। सिर्फ राजनीति स्वार्थ एवं प्रलोभन के लिए उसका आयोजन नही होना चाहिए। इतनी क्षमता आयोजक द्वारा ली गई तो शोकसभा यह पक्ष सक्षमीकरण के लिए निश्चित ही महत्वपूर्ण बन सकती है।

शोकसभा का लाभ कैसा एवं कितना लेना है वह उस राजनिती के नेता के से हमारे ध्यान में आ सकता है।

वैचारिक दृष्टी से शोकसभा को विचार करने के लिए प्रवृत्त किया जा सकता है। विचारो केसाथ दो हाथ विचारो से ही किया जा सकता है। वैचारिकता एवं बौध्दिकता के कारण वैचारिक संघटनाओं को महत्व प्राप्त होता है। विचारो को अगली पिढी की तरफ संक्रमित किया जाता है।

राष्ट्रीय भावना से भी शोकसभा महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय सभ्यता एव संस्कृती इससे व्यक्त होती है। आदरभाव, प्रेमभाव व्यक्त होता है। इस कारण राष्ट्रीय दृष्टी से महत्वपूर्ण ऐसी चीजे हमेशा चर्चा एवं चिंता का विषय होता है। विश्व मे मार्गदर्शक हो इस दृष्टी से शोकसभा का महत्व है।

राष्ट्रीय कर्तव्य का एक भाग शोकसभा का आयोजन है। इस प्रकार संक्षिप्त में शोकसभा का महत्व हम कह सकते है।

शोकसभा की परिणामकारकता :-

शोकसभा का परिणाम समाज मे भिन्न भिन्न सार एवं आयु पर एक जैसा न होते हुए वे भावनिक नजदीकता, वैचारिक साहचर्य, अनुयायीत्व, श्रध्दा, प्रामाणिक निष्ठा आदि पर परिणाम करता है।

मृत व्यक्ति के आयु से बढे व्यक्ति को कर्तव्यपूर्ती एवं समवयस्क को प्रभावित करने का व छौटो को प्रेरित करनेवाला शोकसभा का परिणाम होता है।

मृत व्यक्ति के कार्य कृतीत्व एवं जीवनादर्श का विशिष्ट परिणाम सहभागीओ पर होता है। इस परिणामाओं को गिनने की पट्टी भी उपलब्ध रही है। लेकीन कार्यक्रमों मे उपस्थिती, गांभीर्य, समाज में उत्पन्न चर्चा एवं समाज में व्यक्त बातचीत इस पर से परिणामता नजर आती है।

दु:खी प्रसंग से समाज मे विभिन्न घटको को मुख्य परिस्थिती पर आने के लिए समय लगता है। और शोकसभा इन को परिस्थिती मे लाने की क्षमता रखती है। वे परिणाम अगर संयोजक साध्य कर पाती है तो निश्चित ही मृत व्यक्ति के आत्मा को शांतता मिलेगी।

अंत मे यह कहा जा सकता है की, शोकसभा की परिणामकारकता अमूर्त स्वरुप, अंतरआत्मा में नजर आती है। इस कारण मृत्यु से न भरकर आनेवाली (नुकसान, दु:ख, खेद, विलाप) उसका महत्व एवं स्वरुप ध्यान मे आना आवश्यक है।

❑❑❑

२. शोकसभा : परिभाषा, अर्थ एवं संकल्पना

शोकसभा : विविध कोश अर्थ

१. शोक : (सं.पु.) दुख, खेद, लाप / विरह
शालेय मराठी शब्दकोश : संपादक : रघुनाथ हरी
आफले, रंगनाथ सखाराम वाघमारे पृ.२५४

२. सभा : (सं.स्त्री.) समाज, मंडल, कचेरी, दरबार, तत्रैव, पृ.२६३

३. शोक : (सं.पु.) दुख, आक्रोश, पृ.क्र.४०१, संपादक : प्रा.श्री.ना.बनहटटी, भाउ धर्माधिकारी, सुविचार प्रकाशन मंडल.

शोक : विविध परिभाषाएँ -

१. ह.भप. शंकर महाराज कंधारकर के नुसार " इष्ट व्यक्ती या वस्तु के वियोग से होनेवाला दु:ख इसे शोक कहते है।" (ज्ञानेश्वरी भावदर्शन), पृ.क्र . १६४९, प्रकाशक - श्री.विष्णुबुवा कोल्हापूरकर, इ.स.१९७४, आपेगाव, ता.पैठण, जि.औरंगाबाद

२. शोक - "कुटूंब, पहचान, संबंध, गांव, समाज, व्यक्ती के मृत्यू आदी मे से होनेवाला दु:ख।"

३. माना जाता है की, शोक यह बढते जाता है। शोक को बडे धैर्य के साथ सामना करना चाहिए उसी समय ही उसकी तीव्रता कम होती जाएगी।

४. वियोग से उत्पन्न होनेवाला दु:ख ही शोक है।

५. समूहरुप से व्यक्ती के प्रति किए जानेवाला दु:ख शोकसभा कहलाती है।

६. शोकसभा व्यक्ती के मृत्यू पश्चात आयोजित की जानेवाली सामाजिक बैठक है। जो कुछ समय में ही शमशान में या किस अल्प सभागार में हेतुपूर्वक निश्चित कि जाती है। और उसी समय मृत व्यक्ती के कार्य एवं गुणगौरव की आलोचना की जाती है।

७. शोकसभा यह मृत व्यक्तींके स्मरणार्थ आयोजित की गई होती है। और यह अनौपचारिक कुछ अर्थ में औपचारीक समूह की बैठक होती है।

शोक : परिभाषा -

१. संत ज्ञानेश्वर महाराज -

"पै आपले जे साच।
ते कल्पांतीही न वचे।
हे जाणेनि गताचे।
न शोची जो।।" (ज्ञानेश्वरी अ. १२, ओ.१९२)

जो वस्तू सच में अपनी ही हो वे कभी भी अपने से दूर नही होती। इस कारण वे उस वस्तूके बारे में शोक नही करता।

भक्ती के लक्षण बताते हुऐ वे शोक के बारे में बताते है।

२. संत एकनाथ महाराज -

"नश्वरा इष्टाचा नाश देख।
तेणे देहाहंता मानी दु:ख।
सा नाव गा शोक।
सकलही लोक मानिती।।१७९।।" (नाथ भागवत अ. २८, ओ १७९)

३. ह.भ.प. धुंडामहाराज देगलूरकर :

"इच्छ यह जैसा एक नैमित्तिक विकार है। उसी तरह ही शोक एक नैसर्गिक विकार है, पर सजीव के जीवन में अपरिहार्य रुप से आता है। जिस के बारे में इष्ट बुध्दी होती है ऐसे अचेतन पदार्थ का वियोग होने के पश्चात आत्यंतिक द:ख होता है उसे ही शोक कहते है।"

अब तक हमने शोक के विविध अर्थ एवं उसकी भिन्न परिभाषाए देखी है। अब हमें सभा यानि कया यह देखना है। सभा की परिभाषा "व्यावहारिक मराठी" इस ग्रंथ में श्री.ल.रा. नसिराबादकर इन्होंने कि है। वे देखना आवश्यक है। वे कहते है, "सभा यानिक दो या अधिक व्यक्तीयोंने किसी उद्देश से या कायदा हेतू मान्य एक स्थान पर उपस्थित होना" ही उसकी परिभाषा सभा को सार्थक करती है।

शोकसभा में एक से अधिक व्यक्तिओंकी उपस्थिती होती है। अपने आदरणीय व्यक्ति, शिष्य, अनुयायी, वाचक, चाहते, कार्यकर्ते, रसिक, प्रेक्षक, श्रध्द्रावान, कामगार एवं कर्मचारी ऐसे सभी एकञ होकर ऋण से मुक्त होने के लिए शोकसभा आवश्यक है।

शोकसभा की सूचना दि जाती है। शोकसभा का अध्यक्ष भी होता है। अध्यक्ष का प्रस्ताव रखा जाता है। शोक प्रकट किया जाता है। उसका इतिवृत्तांत भी लिखा जाता इस कारण ऐसी शोकसभा को महत्वपूर्णता होती है।

मृत्यु का सत्यत्व :

मानवी जीवन मृत्यु सत्य एवं निश्चित है। जन्म हैतो मृत्यु भी है। रामदासजी ने दासबोध ग्रंथ के अंतर्गत मृत्यु निरुपण वर्णन करणेवाला एक समास लिखा है। मृत्यु किसी का भी सोच विचार नहीं करता क्रुर, पराक्रमी, झुंजार, कोप, प्रताप, उग्ररुपी, महाखळ, धनाढ्य, विख्यात, धनवान, अद्‌भूत, भूपती, चक्रवर्ती, गजपती, राजा, वरिष्ठ, राजनीतितज्ञ, नोकरीवाला, राजकुमार, व्यापारी ऐसा विचार वह नहीं करता किसी भी धर्म, जात, पंथ, वर्ण का हो व्युत्पन्न पंडित संपन्न, विद्वान, धूर्त, बहुश्रुत, महापंडित, पुरानिक, योगाभ्यासी, दिगंबर, हठयोगी, गजयोगी, वीत रागी, ब्रह्मचारी, जटाधारी, निराहारी, संत, महंत कोई भी हो उसके मृत्यु के बारे में सोचता नही हैं।

मृत्यु निश्चित है। वे तरुन या वृध्द् है ऐसी किसी की अवस्था का वे विचार नहीं करते। मृत्यु सुलक्षणीय है। या विलक्षणीय ऐसा भेद नही करता। मृत्यु यह सुंदर है, विशेष है, सुकृत कर्म करनेवाला है ऐसा विचार मृत्यु करता नहीं। इस कारण कहा जा सकता है कि मृत्यु सत्य एवं निश्चित है। इस कारण मृत्यु का स्मरण आवश्यक है। इस प्रकार संदेश भगवद्‌गीता भी देती है।

मृत्यु से कोई बचा नहीं यही सच। मृत्यु के डर से कोई कितना भी दूर जाए उससे वो पीछा नहीं छूडा सकता। मृत्यु यह स्वदेशी, परदेशी, यह थोर या ईश्वर का अवतार ऐसा कुछ सोचता नहीं। जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु है यह सच है।

यह सब जानकर मनुष्य ने इस विश्व, जग में कर्तृत्व से जीवित रहना आवश्यक है। समर्थ रामदास स्वामीजी कहते है -

"ऐसे जाणोनियां जीवे। याचे सार्थकचि करावे।
जनी मरोन उरावे। कीर्तीरुपे।।"

(श्री दासबोधः दशक ३, समास १०, आ. ४४)

इस विश्व में मृत्युपंथ को अनेक गए है। हमें भी एक दिन जाना है। दीर्घायुषी, वैभवी, महिमा, पराक्रमी, संग्रामी, कुलवंत, चालक, तर्कवादी, धनवान, पुरुषार्थी, राजकर्ता, परोपकारी, विवादी, पंडित, कवी, विचारवंत, विद्वान, आचार्य आदि सभी को आगे जाना है। और वे आगे गए भी है। सभी को मृत्यु पथपर जाना आवश्यक है। किंतु जो स्वरुपाकार आत्मज्ञानी है वे ही इससे छुटकारा पाते है ऐसे समर्थ रामदास स्वामी कहते है।

सच बात तो यह है श्री दासबोध वाचनीय है। उस में मृत्यु सत्य व निश्चितत्व मृत्यु यह एक दिन निश्चित आनेवाला है। यह निशान मन पर आवश्यक होना चाहिए। हसकर मृत्यु की ओर याञा किए स्वातंत्र्यवीरों का मृत्यु का स्मरण हुआ उस के लिए समय कुछ देर रुकेगा। मृत्यु की सत्यत्वता इस कारण आवश्यक है।

शोकसभा की आवश्यकता :

शोकसभा की आवश्यकता क्या है ? किसी को प्रश्न ना आए ऐसा नहीं किंतु उसे भी जवाब उपलब्ध है। शोकसभा की आवश्यकता मुक्त होने के लिए किए जानेवाला प्रयास है।

मृत व्यक्ति को ऋण व्यापक समाज, व्यक्ती, संस्था, पक्ष, संघटना आदि पर होते है और वे उसकी याद शोकसभा लेकर दूर कर देते है।

मृत व्यक्ती समाज के हित की होगी तो जरुरत निश्चित ही होगी। शोकसभा का आयोजन मृत व्यक्ती के समाधान के लिए आवश्यक नही है किंतू जीवित लोगों को उसका समाधान होता है।

उनके कार्य की परछाई उस क्षेत्र पर होती है। उस क्षेत्र में वे कार्य आगे निरंतरता से चलाने वाले व्यक्ती को उसके कार्य की अलोचना करना ही चाहिए।

"मरावे परी कीर्ती रुपी उरावे" ऐसा कहाँ गया है। कार्य का सुगंध दूर तक रहना आवश्यक है। इस कारण शोकसभा का आयोजन आवश्यक है। यह हमें विचार करने को प्रोत्साहित करता है।

स्मशानभूमी :

स्मशानभूमी कैसी हो ? वहाँ किस सुख सुविधाओं की आवश्यकता है। स्मशान

की रचना एवं स्वरुप किस प्रकार का चाहिए ? आदि प्रश्नों पर स्मशान भूमी पर किसी के अंतिम संस्कार पर जाने पश्चात ही चर्चा करते हैं। और वे चर्चा पश्चात फलद्रुपहोने हेतू प्रयत्न कम होते नजर आते है। पुनः स्मशान में जाने पश्चात ही नई नजर से और वही चर्चा होती है। किंतू इस चर्चा पर डॉ.संजय ओक इन्होने लोकसत्ता समाचारपत्र का लोकरंग विशेष अंक में दि.१२/०२/१२ को "राजद्वारे, स्मशानेच....." यह आलेख प्रकाशित कर दिखाया। स्मशान से संबंधीत लेखन करते समय वे कहते है।

"वास्तविकता से शिवालय, जीवन के यात्रा का अंतिम स्थान, यहां से आगे की यात्रा अकेंले अज्ञात कर मोक्षप्राप्ती का द्वार, स्वर्गसुख, रंक-राव, पिडीत-शोषित, राजा-प्रजा, आदि सभी को अपने अंदर समाकर समान स्थितीपर लेनेवाला स्थल यानि स्मशान"

यह स्मशान संकल्पना स्पष्ट करने वाले उनका हृदय हमें भी विचार करने के लिए उत्तेजित करते है। स्मशान कों शिवालय की कल्पना उनकी रम्य कल्पना मूर्तीमंत रुप लगता है।

वहाँ उपलब्ध सुविधा एवं साधन सामग्री के बारे में डॉ.संजय ओक कहते है। "उस समय यहा पर नियोजन करते समय संख्याबल, उसकी मानसिक स्थिती, धार्मिक विधी वो आवश्यक बहता पाणी, पुष्प निर्माल्य के हेतू बडा पात्र, शोकसभागृह, धर्मविधी हेतू जगह और प्रत्यक्ष दहनक्रिया संपन्न हेतू चिता का रचना आदि संपुर्ण चीजों का सखोल विचार होकर, बदलाव होना आवश्यक है। आदि महत्वपूर्ण चर्चा उन्होंने की और वे सार्थ है। उस चर्चा के अंतर्गत शोकसभा के हेतू शोकसभागृह का किया उल्लेख मुझे अत्यंत उपयुक्त एवं महत्वपूर्ण है।"

शोकसभागृह जहाँ पर है उसी स्थान शोकसभा आयोजित की जाएगी। श्रध्दांजली, आदरांजली प्रकट की जाएगी। वह एक अच्छा स्थान होगा और उपयुक्त भी।

स्मशान कें बारे में बचपन सें ही मन मे एक भय था। स्मशान के साथ गुढता थी। स्मशान के उग्र धुअें से घुटन से होती थी। स्मशान में फिर से जाने की भी इच्छा नही होती थी। किंतू जाना जरुरी होता है। स्मशान के बारे में डॉ. संजय ओक कहते है। "जीवन व्यतीत करने के लिए पाठशाला, कॉलेज, मंदिर, थिएटर आवश्यक है किंतू उससे भी आवश्यक है स्मशान" यह सच ही है। हमें स्मशान की ओर धार्मिक एवं सामाजिक जरुरत ही कहा जाता है। संस्कार होनेवाला वा संस्क्रार गृह है। अंत्येष्टी इस शब्द में अंतिम यज्ञ, आवश्यक यज्ञ ऐसा ही अभिप्रेत है। स्मशान कैसा हो इस बारें में

डॉ. संजय ओक अपेक्षा व्यक्त करते हूए कहते है की "वे सुंदर हो, वृक्ष हो, बहता जल हो, शिवालय हो, नंदादीप का आशीर्वाद हे, जीव मुक्ती आनंददायक नही होती है किंतू क्लेशकारक भी नही चाहिए। हम अपने प्रिय व्यक्ती को जिस स्थान पर अलविदा कहते है वही पर सत्य, शिव और सुंदरता का अधिष्ठान होता है। इसका विश्वास प्रिय व्यक्तियों को लगे। दहन कभी होना आसान नही है , किंतू वे मिलन का स्थान या प्रदर्शनीय, प्रेक्षणीय वास्तू बने यह अपेक्षा नही होती किंतू वे एक पवित्र, मांगल्य और आत्मिक सामर्थ्य से भरा हुआ स्थान हो यह निश्चित है।"

स्मशान के बारे मेंअसंख्य कथा और व्यथा है। स्मशान के बारे में आदरयुक्त भय है। स्मशान के सौंदर्य का भान रखनेवाले लोग भी बहूत है। स्मशान की तीन मुख्य समस्या है। एक निवारा, दुसरा पाणी और तिसरा संरक्षण दीवार। प्रत्येक गाव में इस तरह की स्मशान भूमी होती है। विविध योजना होती है। स्मशान में दु:ख की तीव्रता कम हो, समस्या कम हो ऐसे प्रयत्न होने पश्चात समस्याओं को न बताते हुए अंत्यसंस्कार का सुलभ और आसान होगा।

भक्त को शोक नही -

नारद भक्तीसुत्रमें पंचमसुत्र में न शोचित इस पद पर शास्त्र करते हूए ह.भ.प.धुंडामहाराज देगलूरकर कहते है।

"शोक के कारण नश्वर इष्ट वस्तू वियोग यह शोध का कारण स्पष्ट किया है। भक्त के जीवन में इष्ट एक है और वे भगवान है। वे नित्य हृदय में है। उसका अंत होही नही सकता।" इस कारण भक्त शोक नही करता।

शोक से वे दूर होने का प्रयास करता है। यह बताते हूए वे आगे कहते है कि "भक्त सांसारिक किसी भी वस्तू अथवा व्यक्ति के लिए शोक करता नही और वैसा शोक करना यह भगवान का अपमान समझा जाता है। "यह समझ आया तो शोक और भक्त इन दोनों का संबंध कैसा है यह समझ आता है। विचारी भक्त शोक से दूर रहना ही पसंद करता है। उसकी भगवान पर की निष्ठा दृढ होती है। इस कारण भक्त शोक ही नही करता ऐसा जिस शीर्षक में व सहेतू कहा जाता है। शोक के स्वरुप के बारें मे ह.भ.प.धुंडामहाराज देगलूरकर आगे कहते है। "शोक मनुष्य के वर्तमान से दूर रखकर भूतकाल की तरफ ले जाता है। व्यक्त करने के लिए ही शोकहोता है। शोक मनुष्य को वर्तमान स्थिती में रहने नही देता। इस कारण 'न शोचित' ऐसा कहा गया है।"

श्रीमद् भागवत में गोपीका के शोक बारे मे कृष्ण वियोग इस कारण होने के

बावजूद दर्शन लालसासे प्रेम प्रकर्श वहा होता है। इस कारण गोपीकाओं का शोक, शोक होता नही है। वे कृष्ण गोपीओंको प्रेम संबंधी भूमिका अत्यंत योग्य लगती है।

जैसा जिसका अधिकार -

जिस मृत व्यक्ति की शोकसभा हम आयोजित कर रहे है उसका अधिकार, कार्य, दर्जा, भूमिका ध्यान में लेकर कार्यक्रम के हेतू अतिथी आमंत्रित करते समय, मृत व्यक्ती समान या उससे बढकर अधिकार संपन्न व्यक्ति ही आमंत्रित करना योग्य होगा।

अधिकार प्राप्त करने हेतू कष्ट, परिश्रम, तपश्चर्या, वाचन, लेखन, चिंतन, मनन एवं साधना आवश्यक है। ऐसे व्यक्ती समाज में विभीन्न क्षेत्र में नजर आते है।

मृत व्यक्ती जिस क्षेत्र में भी उस क्षेत्र से संबंधीत कोई अधिकार संपन्न व्यक्ती चयन कर उसे शोकसभा हेतू आमंत्रित करना आवश्यक है।

मृत व्यक्ती का जीवन समाज में किस प्रकार था उनके कार्य का स्मरण, लंबे समय तक हो ऐसी भावना ही आयोजक के मन में हो।

धार्मिक, आध्यात्मिक व्यक्ती भी समाज में होती है। उन्हें भी ऐसे समय आमंत्रित करना योग्य है।

औचित्य समय -

शोकसभा या श्रध्दांजली अर्पण यह कार्यक्रम यह व्यक्ती के अग्निदाह, दफनविधी, प्रत्यक्ष उसी स्थान पर या अन्य स्थान पर कर सकते है। पहले दिन से साधारणत: पंधरा दिन तक अन्य स्थान किसी भी समय शोकसभा का आयोजन किया जा सकता है।

शोकसभा मृत्यू पश्चात साधारणत: पंधरा दिन में लेना ही औचित्य पर होता है। देर तक लेना अच्छी नही। हेतूत: अथवा किसी अपरिहार्य कारण से विलंब हुआ तों समाज को उसका महत्व समझ आएगा। किंतू औचित्य यह है की, पंधरा दिन का समय ग्राहय है। एवं शोकसभा अथवा श्रध्दांजली का कार्यक्रम आयोजन करना अच्छा होगा।

मृत्यू लेख -

शोकसभा आयोजक और एक महत्वपूर्ण कार्य पुरा करे की, जिस व्यक्ती हेतू शोकसभा आयोजित कर रहे है उसके बारे मे विद्वानों के पास से मृत्यू लेख तय्यार कर ले। वे शोकसभा के दिन प्रसारमाध्यम की ओर दे ताकी वे औचित्य पर होगा।

सर्व प्रथम हमें मृत्यू लेख क्या होता है यह जानकर लेना होगा। प्रा.सुहासकुमार बोबडे इन्होंने मृत्यूलेख : एक वाङ्मय प्रकार, इस लेख के अंतर्गत कहते है की, मृत

व्यक्ती के बारे में उसके मृत्यू पश्चात स्मरण करना, उसके बारे में कृतज्ञता व्यक्त करना, वे एक व्यक्ती के नाते किस प्रकार था, प्रकट करने की भावना से मृत्यूलेख इस वाङ्मय प्रकार का लेखन होता है। यह उस मृत्यूलेख के बारे में स्पष्ट हो ऐसा मुझे लगता है। इसमें से हमें कुछ चीजें ध्यान में आती है। उसमें मृत्यूलेख स्मरण हेतू, कृतज्ञहेतू एवं व्यक्ती पर किया जाता है। और यह महत्वपूर्ण है।

मृत्यूलेख यह गद्य वाङ्मय प्रकार किंतू वे काव्यात्मक भी कर सकते है। उसके साथ व्यक्ती चित्रणात्मक भी कर सकते है। मृत्यूलेख में मृत व्यक्ती के बारे में अपनापन, प्रेम, कार्य एवं अलौकिकत्व प्रकट कर सकते है।

मृत्यूलेख लेखन करने वाले अगर लेखक के संपर्क में है तो वे और भी सुंदर कर सकते है। बहूत दु:ख होता है की मृत्यूलेख लिखते समय केवल-परिचय लेखन करके ठहरते नही तो वे स्वभावत: जो दु:ख, विराह, सामाजिक नुकसान हुआ है उसका उल्लेख किए बगैर रहते नही। मृत्युलेख ना यश सिर्फ पढने हेतू न रहकर अभ्यासनीय और संदर्भीय हो जाता है।

मृत्यू का गांभीर्य उसमें होता ही है। मृत व्यक्ती का व्यक्तीमत्व व उसका महत्व हमें समझ आता है। मृत्युलेख कीस पर भी लिखा जा सकता है। सर्वसामान्य व्यक्ती भी मृत्यूलेख का विषय हो सकता है। मृत्यूलेख लेखन करनेवाला लेखक यह जीवन से अलिप्त नही रह सकता है।

व्यक्ती का दर्शन समय के संदर्भ होते है और जीवन का चिंतन ऐसे लेखन में प्रकट होते है।

मृत्यूलेख में लेखक को ज्यादा से ज्यादा सत्य के समीप जाकर वास्तवधीष्ठी लेखनही करना होगा। रचनामय लेखन यही पर नही किया जा सकता।

मृत्यूलेखन का स्वरुप मृत्यू जैसा दु:खद, शोकरसप्रधान ही होता है। महाराष्ट्र में लोकमान्य टिलक, अच्युतराव कोल्टटकर, आचार्य प्रल्हाद केशव अत्रे आदि ने मृत्यूलेख की परंपरा निर्माण की है। प्रा.सुहासकूमार बोबडे इस वाङ्मय प्रकार को पाश्चात्य मानते है और बेकन को उसका श्रेय देते है।

मृत्यूलेखन के लेख, निबंध, व्यक्तीचित्र एवं कथा काव्यात्मक मृत्यूलेख ऐसे विविध प्रकार है। प्रा.बोबडे इन्होंने व्यक्तिदर्शन, भावनिकता, व्यक्तीगत एवं सांस्कृतिक पार्श्वभूमी, वर्ण, व्यक्ती - लेखक आदि संबंध कलात्मक आलिप्तता आदि मृत्यूलेख में आवश्यक है, ऐसा कहा गया है। अंत में निष्कर्ष में कहा गया की, भावनिक ऐसा वाङ्मय

प्रकार है, मृत व्यक्ती का विविधांगी दर्शन देने वाला, सत्यकथन के साथ साथ अनुभव का सत्यापन, जीवन व्यापी सारांश महत्वपूर्ण है।

अब तक हम यह चर्चा जानबुझकर यहा पर की है। शोकसभा के आयोजकोंने मृत्यूलेख के लेखन को प्रवृत्त कर उसे लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाए और मृत्यूलेख मूलसाध्य, ध्येयो की और लेकर जाने हेतू लेखन किया जाए इतनीही अपेक्षा व्यक्त करना अच्छा है। शोकसभा में मृत्यूलेख का औचित्य व्यक्ती के उदात्तीकरण हेतू आवश्यक है। इतना निश्चित है।

एक सामान्य मृत्यूलेख -

खंदा देनेवाले व्यक्तीओंने चांदनी निकले बगैर भोजन नही करना चाहिए। ऐसा उस गांव की संस्कृती होने कारण में घरसे बाहर फरशीपर, दुकान के सामने दिनभर बैठनेवाला था। जिस आंगन में कुछ समय पहले रोने का आक्रोश आकाश को जाकर मिला था उसी अंगन मे अब रोटी ले लो कहकर बांटी जा रही है। में हमेशा बाबूराव के मृत्यू के बारे में सोच रहा हूं। बाबूराव किसी असामान्य, प्रसिध्द या किसीभी दैवी गुणों का नही था। तब भी मुझे एसके जीवन कें बारें मे सोच विचार करना जरुरी समझा।

जिस दिन बाबुराव के साथ मेरी दोस्ती हूई उसी दिन मैने मन में निश्चित किया था की इस दोस्ती का अंत मृत्यू के सिवा नही है। आज बाबूराव की मृत्यू हूई। किंतू उस दोस्तीका अंत नही हुआ ऐसा लग रहा है। क्योंकी परमार्थ से बाबुराव के में अबभी निकट हुं। बाबुराव को तम्बाखू, पान, सुपारी खाने की आदत. इस आदत के पीछे उनका तत्वज्ञान भी था। 'स्मशानशीले व्यसनेशु सख्यं'। ऐसा किसी सुभाषित कारने दिए हुई रचना उन्हें मालूम थी। और उन्होंने उसके बलपर गाव, परगांव में परिचीत, व्यवहार और व्यवहार बाह्य, असंख्य दोस्त बनाए थे। सिर्फ एक समय से तंम्बाखू हेतू।

बाबूराव के घर में मातृछत्र ज्यादा दिन न मिलने के कारण पिताजी के ईच्छा हेतू छात्रदशा में ही विवाह हुआ।

गांव मे सभी के कहने पर गांव के भटजी, ब्राम्हण की बेटी बबी और बाबुराव का सुखी संसार शुरु हुआ। संसार मे बबी ने बहुत झगडा किया किंतू मायका गांव में ही किंतू उसने कभी मायके का नाम भी नही निकाला। रक्षाबंधन और अन्य त्योहारौ के लिए बाप के पीछे भाई के पास जाकर सन्मान की सुपारी ले आती।

बबी के आने से बाब्या का जैसे बाबुराव हो गया वैसे ही गाव की पाठशाला मे मास्टर बन गए।

जिले मे बहुत गाव में तबदला होने के कारण साहब के पैर पकडकर पेन्शनसे पूर्व चार पाच साल पहले ही गाव मे आकर स्थापित हो गया। और आज उनकी मृत्यू। उम्र अभी मृत्यू की नही थी। किंतू मृत्यू से किसी ने छुटकारा नही पाया। एक ना एक दिन आनेवाला किंतू उससे पहले जो काम करते थे अगर पूरे हो गये तो बस्स ऐसा बाबूराव कहते थे। किंतू उनके अंत्य एक अनेक काम वैसे ही बाकी रह गए थे।

बाबुराव अध्यापक होने के कारण जितनी तन्मयता से उन्होंने यशवंत की आई यह कविता अध्यापन की थी। उतनी ही तन्मयता से बबीवर की हुई गुलाब केकाटे यह कविता उन्होंने अपने रिश्तेदारोंमे, सहकारीयों, दोस्तो के साथ छात्रों और गाव में भी और बबी को भी कहकर / सुनाकर बताते।

जिस गांव मे अध्यापक है उस गांव मे नाटक होना ही चाहिए। बैठना ही चाहिए, ऐसा बाबुरावजी कीं ईच्छा या इस कारण जिस जिस गांव गए वहा पर राजा हरिच्छंद्र के साथ शारदा यह नाटक प्रस्तुतीकरण के लिए तैयार किए। उस समय वृध्दों को अपनेपण का विषय बन गया।

रेल के वर्णन का पाठय उन्होंने छात्रों को रेल्वे दिखाए बगैर जिस प्रकार कभी पढाया नही वैसे ही बालकवी का श्रावणमास कविता श्रावण माह में ही पढाई जाए ऐसा जिश्चय ही बना लिया था।

जीवन भर उन्होंने विभिन्न विषयोंपर चर्चा की, उसमें जागतिक राजनिती से शर्ट कैसे सिए ऐसे सभी का समावेश था।

जीवन देर सारी समयोजन किए जैसे बबी के साथ विवाह का निर्णय , उसमें प्लेग के दिनों मे गाव के बाहर झोपडी में रहने से लेकर बबी के चार दिन में चुपचाप से खिचडी खाने तक सब का समावेश था।

कोई ऐसे कहते है की बाबुराव को राजनिती में का क्या समझता है ? मुझे वह समझ आता है देश का पंतप्रधान कोन बनेगा ? राज्य का मुख्यमंत्री कोन बनेगा ? शिक्षामंत्री कौन बनेगा ? यह बात कभी कह नही सके। किंतु विधीमंडल, कारखानेका, चेअरमन, दुध एवं खरेदी विक्री संघ का चेअरमन, पतपेढी का चेअरमन कौन बनेगा ? किस का तबादला कहा होगा यह मात्र सच और निश्चित रुप में बताते थे।

देश के नियोजन पर अनेक बार जोर जोर से चर्चा कर के वाद-विवाद किए और पराभव किए बगेर उन्होंने वापिस जाने नही दिया। और एक चाय पिलाए बगैर चर्चा समाप्त नही होने दी।

सुचना प्रोद्योगिकी और विज्ञान ने बहूत प्रगती की है किंतु मृत्यू के शोध के सिवा व्यर्थ ये जानते हुए भी बबी के कारण दूरदर्शन संच और राजा के इच्छा हेतू टेपरिकार्डर उन्होंने लिया था। शराब की बॉटल सिर के निचे लिए बगैर नींद नही आती थी।

भास्कराचार्य से लेकर अबतक गणित का हुआ विकास उन्होंने जानकर नही लिया किंतु विश्व शुन्य के सिवां नही ऐसी उनकी धारणा थी। हर एक जीवन में कुछ कम ज्यादा होता ही रहता है ऐसा वे मानते है।

पुराणोंमे आखिर झगडों के बगैर है क्या ? ऐसा कहकर वे हमेशा दुसरों के झगडे किए करते थे। कभी दुधवाले के साथ। कभी शिक्षा अधिकारी के साथ किंतु शिक्षा अधिकारी के माँ की मृत्यू होने पश्चात उनसे मिलने के लिए वहा गए। और अगले साल जब उनकी गाँव की ओर तबादला हुआ उस समय साहब को भुटटे खाने हेतू आमंत्रित किया।

इस देश में पाच लाख गाव है, एक नाम गाव के बहूत है, यह जानकारी होते हुए भी उन्होंने अपने गाव का नाम कलगाव क्यों है ? कळ का अर्थ नारद के पास से इस गाव को क्यो है यहाँ से लेकर रंगू नाम के सफाई कामगार कैसी है यह बताए बगैर वे रुकते न थे।

प्रत्येक गांव मे हनुमानजी का मंदिर होता है। किंतू हमारे गांव का ही हनुमानजी मन्नत पुरी क्यो करता है।

पुरी सजीव सृष्टी में सर्वश्रेष्ठ कोन है ? यह पुछे जाने पर मनुष्य श्रेष्ठ है। ऐसा जवाब मिलता है और सभी जातीओं मे ब्राह्मण यही श्रेष्ठ कैसे है वे बताते थे और जब रसेल का मत अगर यह मत चीटोंयो ने माना तो मनुष्य श्रेष्ठ है यह समझ आनेपर सभी प्राणीयों प्रति उनके मन मे आदर उत्पन्न हुआ और अब उन्हे भगवान खंडोबा का कुत्ता काँट लेता है तो वे उस कुत्तो को मार डालने का सोचते है।

बाबुरावजी को प्रसिध्दी कभी भी अच्छी नही लगती समाचारपत्र मे फोटो, नाम आए ऐसा कभी सोचा नही। किसी भी उत्सव कार्यक्रम को आगे नही आए किंतु खुद ही शादी मे पत्रिका में एस.एस.सी. पात्रता लिखने वे उनके पिताजी भुले तो उनपे वे बहुत नाराज हुए थे। वे मैने अपनी आँखो से देखा था।

बाबुराव शूरवीर, पराक्रमी नही थे। लेकिन गाँव में किसी मृत्यु पश्चात अगर मृतदेह पूर्ण रात्र रख दे तो बाबुराव उस मृतदेह के साथ बैठे रहते थे। किंतु उनकी बेटी बाळी के मृत्यु पश्चात दिन रात उनके आँखो आँसू न रु पाए।

अब गांव मे बाबुराव ऐसा था, वैसा था आदि चर्चा चल रही होती है। बच्चों को आज पाठशाला को छुट्टी मिलने का आनंद हुआ होगा। बाबुराव के दोनो बहुओ को अच्छा हुआ ऐसी भी लग रहा होगा, रिश्तेदारों को दिन अन लग रहा होता। किंतु इस कारण बाबुराव अगर जाने को रोक पाते नहीं वे एक ना एक दिन जानेवाले ही थे। बाबुराव ने भी हजारों बार कहा था कि आनेवाले प्राणी की मृत्यु निश्चित है।

अब क्या वे तो गए। सिर्फ यादे रही है। किंतु वे यादे सामान्य व्यक्तिओं को प्रेरणा देती रहेगी। इस में शंका नही है। आज बाबुराव गए कल हम जाऐंगे उस समय खंदा देनेवाला ऐसी ही तारों के आने की राह देखेगा। ईश्वर उनके आत्मा को शांती दे। क्यो की ईश्वर निष्ठूर नही है। ऐसा कहकर स्नान कर के भोजन की थाली खिंचली थी।

बाबुराव एक बरगद के पेड समान सेंकडो लोगो छांव नही दे सकते किंतु मेरे जैसे सामान्य को आधार देनेवाले थे।

मृत्यु पश्चात :-

मराठी में कुछ पंक्तियाँ है की, मरावे परी कीर्ती रुपी उरावे अर्थ है की मृत्यु लोक में शरीर से कोई अमर नही होता किंतु कीर्ति रुप से हम अमर हो सकते है। ऐसी सभी अपेक्षा व्यक्त करते है।

शोकसभा आयोजक ने कीर्ती का सही अर्थ जान कर लेने की जरुरत है। कीर्ती यानी क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर देते समय ग्रामगीताकार राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज कहते है,

'कीर्ति तोचि स्वर्ग। अपकीर्ति नरकाचा पसारा।'

वे ऐसी ही नहीं। स्वर्ग यानि, कीर्ती-सत्कीर्ती एव अपकीर्ती यानी नरक। व्यक्ति के जीवन में कार्य ही स्वर्ग नरक है। स्वार्थ हेतू कार्य होगा तो नरक और परमार्थ अगर लोगो के लिए, समाज हेतु कार्य हो तो स्वर्ग है।

मृत व्यक्ति जन्म प्राप्त करके क्या किया इसका विचार होना आवश्यक है। उत्तम कार्य हो तो उत्तम धाम मिलेगा। अपने गांव मे स्मरण रहे इस कारण गांव मे दान का कार्य किया जाए ऐसा राष्ट्रसंत कहते है। औषधी के लिए दान-पुण्य कार्य किया जाए। इससे मदद मिलेगी।

सत्कीर्ती यह चंदन के समान होती है। उसकी सुगंध सभी तरफ होती है। कीर्ती रुप से रहने के लिए सतत कार्य करने की इच्छा व्यक्ति के मन पर आती है। शोकसभा के आयोजक को यह ध्यान होना चाहिए।

३. शोकसभा : स्वरुप एवं अंतरंग

किसकी शोकसभा :

शोकसभा किस की हो ? ऐसा सवाल सभी को होगा ? उसका जवाब देना आवश्यक है। शोकसभा उस व्यक्ति की हो सकती है जो दूसरों के लिए जीवन सर्मपित किया हो। जिस व्यक्ति ने किसी सामाजिक संस्कार को समाज को दिया हो। शोकसभा उस की हो सकती है जिसने चंदन जैसा तन सर्मपित किया हो। वकील, डॉक्टर, इंजिनिअर, कॉन्ट्रॅक्टर, अध्यापक, प्राध्यापक, पत्रकार इन्होने अपने संसार को चलने के लिए कार्य किया है। किंतु अन्य बहुत से लोगो वे सदा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष संबंध होता है उनका मार्गदर्शन समाज और विद्यार्थीयों को उपकारक ही होना है। तभी इनकी शोकसभा का आयोजन हम कर सकते है।

समाज में धर्मवीर, ज्ञानवीर, परंपरा से लोग अग्रणी धार्मिक कार्य करनेवाले लोगो की भी शोकसभा आयोजित कर सकते है। धनवान व्यक्ती भी इसे अपवाद नही होते।

समाज मे त्यागी पुरुष की शोकसभा का आयोजन किया जाए। गाव, देश, समाज हेतू जिन्होंने आयुष्य, जीवन सर्मपित किया उन्ही की शोकसभा का आयोजन होना ही चाहिए।

तपस्वी, महात्मे, सत्पुरुष, वंश परंपरासे अथवा ज्ञानपरंपरांसे आसनस्थ व्यक्तींयो की भी शोकसभा आयोजित करनी होगी। कला एवं क्रीडाक्षेत्र के व्यक्तियों की भी शोकसभा हो सकती है।

अकस्मात नैसर्गिक अथवा मानवी आपत्ती में मृत व्यक्ती जिसे समूह सहानुभूती मिली तो उसकी शोकसभा का आयोजन हो।

भारतीय सैन्य दल में या पुलीस दल में किसी भी पदपर कार्यरत व्यक्ति मृत हुई तो उसकी भी शोकसभा का आयोजन होना आवश्यक है। उनका कार्य अंतिमत: राष्ट्रहित स्वरुप का होता है।

समाजसेवा, राष्ट्रसेवा इन क्षेत्र मे कार्य कम ज्यादा भी हो अंतर्गत मृत व्यक्ति जिसका जिज्ञासा के स्तर पर मानवता के नाते उनके शोकसभा का आयोजन किया जाए।

सत्कार्य करनेवाला कोई भी मृत व्यक्ति शोकसभा का हकदार होता है। इसकारण शोकसभा किस की आयोजित कि जाए इस प्रश्न का उत्तर यहाँ पर सारांश रुप से मिले तो भी सार्थकता है।

आयोजक कौन -

शोकसभा आयोजित किसने की ? ऐसा प्रश्न निश्चित हमारे सामने हो सकता है। इस की चर्चा उपशीर्षक अंतर्गत करना आवश्यक है। शोकसभा आयोजन यह मृत व्यक्ति के हितचिंतक, संस्था के प्रतिनिधी, कुटूंब के संदस्य, सहकारी, विद्यार्थी, अनुयायी, कार्यकर्ते, पक्षीय कार्यकर्ते, कॉलनी की रहिवासी इस प्रकारके मृत व्यक्ति के संपर्क मे आए हूए शोकसभा आयोजन कर सकते है।

शोकसभा हेतू व्यक्ति या पद सामने न लाते हूए, संस्था, संघटना हो। शोकसभा हेतू आयोजक किसी कंपनी, उद्योग संस्था, सभा या विचार प्रवाह हेतू कार्य किए जानेवाले व्यक्ति समूह हो जो शोकसभा आयोजित कर सके।

शोक यह वियोग से उत्पन्न होता है। आयोजक ने मृत व्यक्ति का किस स्वरुप नुकसान हुआ है यह ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम का आयोजन करे।

शोकसभा सभी के लिए होती है। सहभागी व्यक्तिओंका भी आयोजक ने सोचविचार करना योग्य होगा। जैसे ज्ञान, पूर्वानूभव, आयु आदि.

आयोजक मे सामूहिक भावना दृढ हो सके इसके कारण कार्य समर्थ्य बढे। मृत व्यक्ति की प्रेरणा लेकर आगे आए हुए लोग इस आयोजन मे सहभाग ले सकते है। शोकसभा मे स्वगोत्र से स्वसंबंधी तक सभी सहभाग ले सकते है एवं आयोजक के रुप

में कार्य भी कर सकते है।

आयोजक ने शोकसभा हेतू किस स्वरुप व कार्यक्रम का आयोजन करे इसलिए लोकमत लेना आवश्यक है। मृत व्यक्ति के क्षेत्रपरत्वे विभिन्न कल्पना आगे आ सकती है। आयोजक ने इसका ध्यान रखकर शोकसभा को आमंत्रित करे। प्रभावी कल्पना आयोजन में कम से कम समय में निश्चित कैसे करे इसका विचार करना आवश्यक है।

शोकसभा का अध्यक्ष -

शोकसभा आयोजक ने शोकसभा हेतू अध्यक्ष के रूप में किसे आमंत्रित करे इस विषय को यहां चर्चा करनी है। शोकसभा जिस मृत व्यक्ति की लेनी है उसका जिस क्षेत्र हो, उदा. क्षेत्र का व्यक्ति अधिकारी के रुप में हो, नाटय, साहित्य, संगित, ऐसी परंपरा मे अनेक अधिकारी व्यक्ति होते है। उनकी जीवन मानो एक विचारधारा अथवा समर्पित होता है। उन्हें शोकसभा का अध्यक्ष रुप दे।

दूसरी महत्वपूर्ण बात ऐसे है की, मृत व्यक्तिका सहप्रवासी, सहकारी, खंदे से खंदा लगाकर काम करनेवाला व्यक्ति अथवा आयु से ज्येष्ठ व्यक्ति भी शोकसभा का अध्यक्ष कर सकते है।

मृत व्यक्ति के कार्य भी पहचान एवं वे आगे ले जाने की सामाजिक ईच्छा रखी व्यक्ति भी अध्यक्षपद हेतू योग्य होगी।

हर समय गाव, समाज में ज्येष्ठ राजनिती व्यक्ति, ज्येष्ठ समाजसेवक, इन्हें भी अध्यक्ष के रुप शोकसभा हेतू विचार किया जा सकता है। कुछ समय पर सिध्द व्यक्ति की अध्यक्ष हो सकते है। पाठशाला के शिक्षक के मृत्यू पश्चात, प्रधानाचार्य, आचार्य, शिक्षाधिकारी, शिक्षासभापती , ज्येष्ठ शिक्षक, शिक्षासंस्थापक, आदि. शोकसभा के अध्यक्ष के रुप में आमंत्रित कर सकते है। मृत व्यक्ति के कार्य का विस्तार कैसा एवं कितना बढा है आदि सोच विचार कर यही पर अध्यक्षपद दिया जाए। कुछ समय ऐसी व्यक्ति न मिलनेपर ज्येष्ठ अभ्यासक, विभूती धार्मिक क्षेत्र एवं अध्यात्म क्षेत्र में काम करनेवाली व्यक्ति, सदगुण विकसित करनेवाली ज्येष्ठ व्यक्ति इस अध्यक्षपद हेतू चयन कर सकते है। मृत व्यक्ति के गुरु, मार्गदर्शक यह भी शोकसभा हेतू अध्यक्ष के रुप में शिष्या के सामाजिक गुणों का वर्णन कर सकते है।

विज्ञान क्षेत्र से ज्येष्ठ, शास्त्रज्ञ, संशोधक, इन्हें भी अध्यक्षपद के लिए निमंत्रित कर सकते है।

अध्यक्षपद हेतू निमंत्रित कि जानेवाली व्यक्ति यह मृत व्यक्ति के कार्य से

पूर्णरुप से परिचित, दिशा दर्शक, प्रेरणा देनेवाली, सामाजिक बंधुता एवं पुर्वानूभव आदि व्यक्ति भी अध्यक्षपद हेतू आयोजक आमंत्रित कर सकते है।

समाज में अंतर्भूत संवेदनक्षम भावनाप्रिय, व्यक्ति अध्यक्षपद हेतू आमंत्रित कर सकते है। शोकभावना को प्रेरणा देनेवाली, मृत व्यक्ति का कार्य लागों के सम्मुख आए इसकारण प्रयत्नशील व्यक्ति अध्यक्षपद हेतू निमंत्रित कर सकते है। आदि बातों का विचार कर व्यक्ति का चयन हो।

शोकसभा हेतू कुछ नियम -

१. शोकसभा के लिए निश्चित समय पर उपस्थित रहे।
२. शोकसभा मे मान सम्मान की सोच ना करे।
३. मृत व्यक्ति के कुटूंबीय सदस्य सहभाग ले सकते है।
४. शोकसभा हेतू वक्ता की संख्या ज्यादा ना हो।
५. शोकसभा का समय / कालावधी उचित हो।
६. आयोजक ने समय और स्थान की सूचना करे।
७. शोकसभा में समान बंधुत्व स्थितीपर कार्य हो।
८. शोकसभा का गांभीर्य सभी संभाले।
९. प्रसिध्दी की चर्चा कार्यक्रम मे ना हो।
१०. सामान्य लोगों के स्तर पर कार्यक्रम का आयोजन करे। स्वागत आभार आदि वर्ज्य है।
११. वक्ताओं ने अनुभव कथन का पुनर्उच्चारण ना करे।
१२. वक्ताओं ने काल्पनिक विनोद, हास्य, तालीया हो ऐसे वक्तव्य न करे।
१३. मृत व्यक्ति की उपहासात्मक चर्चा ना करे।
१४. ज्यादा भीड, चर्चा ना करे, कार्यक्रम की शिस्तबध्दता एवं शांतता ना बिघडे आदि का ध्यान रखे।

शोकसभा आयोजक को के लिए सूचना -

१. शोकसभा वक्ता को समय और विषय का गांभीर्य हो।
२. आसनव्यवस्था की ओर ध्यान दे।
३. सहभागीयों को समाकर ले।
४. मंचपर भीड ना हो।
५. शोकभावना व्यक्त करने हेतू हम सब एकत्रित हूए इसका भान रखे्।

६. आवाज का स्तर सामान्य हो।

७. अतिउत्साह के कारण मुख्य कार्यक्रम से दूर ना जाए।

८. साहित्य की उपलब्धता कार्यक्रम के पूर्व ही हो।

९. सहकारीयों को विश्वास मे ले।

१०. सहकारी, कार्यकर्ता, स्वयंसेवक एवं सहभागी सभी से शांतता से एवं नम्रता का व्यवहार करे।

११. प्रसिध्द माध्यमों के प्रतिनिधी को प्रत्यक्ष रुप से भेंट देकर सूचना दे।

शोकसभा का चित्रिकरण -

शोकसभा का यह बार बार देखने की सभा निश्चित नही है। किंतू शोकसभा का अच्छासा चित्रीकरण हमें उपयोग मे आ सकता है। मृत व्यक्ति के कार्य-कर्तृत्व को अच्छा लगे ऐसा लघु-चित्रफित, जानकारी चित्रफित अगर भविष्य निर्मित कर उसका व्यापक लोकसहभाग हेतू प्रयोग करना है तो शोकसभा चित्रीकरण आवश्यक है।

ध्वनिमुद्रण भी स्वीकार्य अंश आयोजकोंने प्रथम सुनकर बाद में सूचना करे। मृत व्यक्ति के बारें मे यादे जागृत रहे और व्यक्ति के कार्यरुप से जीवित रखने हेतू इस प्रकार के प्रसारमाध्यमों की आवश्यकता है। इसकारण ध्वनिमुद्रण आवश्यक है।

शोकसभा की पत्रिका -

शोकसभा आयोजक ने कार्यक्रम की पत्रिका तैयार कर के वितरीत करने का कार्य करना चाहिए। उन्हीपर यह कार्य अवलंबीत है। मृत व्यक्ति के स्नेहसंबंधपर सभी आयोजक संस्थांके परिवार के सभी शोकसभा निमंत्रण के पात्र है। उन्हें वे देय आवश्यक है।

पत्रिकापर मृत व्यक्ति का नाम भावपूर्ण श्रध्दांजली, भावपूर्ण आदरांजली संस्कार संजीवन ऐसे मुख्य शीर्षक से फोटो या पुष्प का चित्र एवं कार्य से संबंधित दे। पंक्तिया होनी चाहिए। आयोजक संस्था का नाम, स्थान, समय एवं दिनांक / तारीख निर्देशित होना जरुरी है। श्री,ओम, श्रीफल, दीपक, ऐसी शुभ चिन्हांकित वर्ज्य है।

शोकसभा की पत्रिका परिवार के सभी को वितरीत करे। सभी को जानकारी हो। समय स्थान के साथ साथ आने का रहे। समाचारपत्र, दूरदर्शन, आकाशवाणी के मद्द से सभी को कहे। मृत व्यक्ति के संबंधित सभी के पत्रिका देना आवश्यक है। सभी का सहयोग प्राप्त करें।

शोकसभा नमुना पत्रिका -

शोकसभा एक नमुना पत्रिका निम्न प्रकार से है। साधारणत: ऐसा स्वरुप हो, अलंकारिक ना करे। कार्यक्रम का स्वरुप समझ आए इतना हेतू होना है।

।। भावपूर्ण श्रध्दांजली ।।

प्रति, ----------

समाज के एक प्रभावी एवं तेजस्वी व्यक्तिमत्व हमारी साथ छोडे चले गए । दि..../..../..... के दिन श्री./सौ.---------- इनकी मृत्यू हुई ।

------- क्षेत्र का उगता सितारा चला गया। ------- क्षेत्र में अपरिमित नुकसान हुआ। गांव /शहर/ समाज पर उनके कार्य एवं कर्तृत्व कभी भी न समाप्त होनेवाला संस्कार है । उनके कार्य उनके शिष्य / विद्यार्थी / सहकारी / सहप्रवासी/ अनुयायी / संशोधक / अभ्यासक आदि श्रध्दांजली अर्पण करने हेतू

शोकसभा का आयोजन किया है । उनका कार्य सदैव याद रहेगा । आप सभी श्रध्दांजली / आदरांजली अर्पण करने हेतू उपस्थित रहे ।

- आयोजक -

१. समस्त ग्रामस्थ ..... २. .....शैक्षणिक संस्था

३. ..... प्रतिष्ठान २. .....सामाजिक संस्था

समय - तिथी - ----------

वार ----------

समय ----------

स्थान - ----------

सारांश रुप से इस पत्रिका पर स्थान, एवं समय का स्पष्ट उल्लख हो। आनेवाले को मार्गदर्शन पूरक हो। यह पत्रिका एक नमुना है। ऐसी हो ऐसा आग्रह नही।

पत्रिका में व्यक्ति के आमंत्रण से संस्था, सामूहिक निमंत्रण का प्रयोग करे। इस कारण उन्हें योग्य दिशा दे। आमंत्रितो में कुटूंब एवं दोस्त, तरुण संघ ऐसी ऐच्छिक मंडल के नाम होना चाहिए किंतु उसके माध्यम से प्रसिध्दी ना करे आदि का ध्यान करे। कर्तव्य

स्पष्ट नजर आए इसमें दु:ख शोकभावना को पत्रिका अच्छे समय में हो। जिसका वितरण करने में सुलभता है।

शोकसभा का विज्ञापन -

शोकसभा आयोजक को कार्यक्रम हेतू विज्ञापन करना हो तो प्रयोजन करना होगा। विज्ञापन एवं उसका स्वरुप निश्चित किया जाए। मृत व्यक्ति का पद कार्य इस विज्ञापन लिखने के आवश्यक नही है। मृत व्यक्ति का नाम, छायाचित्र, शोकसभा समय स्थान आयोजक की संस्था आदि का नाम है।

यह विज्ञापन सभी संचार माध्यमो को बॅनर की मद्द से कार्यक्षेत्र कक्षा मे लगाए यह विज्ञापन अल्पसंख्या के सदस्य अगर लगा रहे तो तो उन्हे प्रोत्साहन दे। मृत व्यक्ति के कारण सही में नुकसान हुआ है तो वे माना करे।

विशेष कारण से कोई क्षेत्र की भूमिका न ले। आत्मप्रेरणा एवं अंतिमत व्यक्तिकी संख्या इन्हे कार्य को अच्छा ना लगे ऐसा कार्य होगा। विज्ञापन करते समय मृत व्यक्ति के कार्य कर्तृत्व को कम से कम शब्द में व्यक्त करनेवाली काव्य पंक्तिया या विदवान के लेखन से हेतुपूर्वक लेखन कर के ले।

मृत व्यक्तिका क्षेत्र राजनिती, नाट्य, साहित्य, गीत-संगीत या अन्य करन का हो तो प्रतिकारक स्थिति निमंत्रण करने हेतू विज्ञापन पर छायाचित्र दे सकते है।

उदा. कोई बांसुरी वादक अविष्कार की मृत्यू हुई हो तो उससे संबंधित स्थितीनुरूप काल्पनिक चित्र हम विज्ञापन लगा सकते है। यहां सिर्फ दिशा दर्शन करना होगा।

विज्ञापन यह समय की मांग है। शोकसभा के विज्ञापन मे दु:ख, शोकावेग प्रतीत हो जाना ही अपेक्षित है। व्यापक समूह भावना निर्माण हो इस कारण विज्ञापन आवश्यक होगा इस कारण निर्देशन किया है।

बॅनर -

शोकसभा आयोजक बॅनर निर्माण करते समय कौशल का प्रयोग करे। शोकभावना प्रतीत हो एवं दुसरा महत्वपूर्ण मृत व्यक्ति का कार्य व्याप्त रुप से समूह के सन्मुख प्रकट करे।

आयोजक ने मृत व्यक्तिका क्षेत्र एवं क्षेत्रअंतर्गत व्याप्त समूहपर अनुभवों का संस्कार करना हो तो निरपद, मार्मिकता, सहेतूक प्रयोग कर सकते है।

बॅनरपर संस्था, समूह इन का ही प्रतिनिधीत्व रहे। व्यक्ति का नाम उद्योग संस्था, शेक्षणिक संस्था, साहित्य, संगीत, नाट्यसंस्था, आदि का उल्लेख हा अच्छा होगा।

बॅनर पर शोकभावना ही प्रकट हो ऐसा निर्माण हो। वही मंचपर दर्शन मुख, चौराहो पर या अन्य स्थानो पर प्रदर्शित करने पश्चात प्रभावी दिखेगा। यह ध्यान में रखकर ही उसका निर्माण हो।

शोक प्रकट हेतू जो प्रदर्शन होगा किंतु मृत व्यक्ति का दर्शन हो इतना हा अपेक्षित है।

शोकसभा बॅनर -

।। भावपूर्ण श्रध्दांजली ।।

नाम ----------

पासपोर्ट साईज
फोटो
पूर्णाकृती फोटो

नैनं छिदन्ति शस्त्राणि
नैनं दहति पावकः ।।
न चैनं क्लेद यंत्यापो
न शोषयति मारुताः ।।

शोकसभा - तिथि - ---------- समय - ---------- स्थान - ----------

।। भावपूर्ण श्रध्दांजली ।।

नाम ----------

पासपोर्ट फोटो

फोटो

शोकसभा - तिथि - ---------- समय - ---------- स्थान - ----------

।। भावपूर्ण श्रध्दांजली ।।

मृत व्यक्तिका नाम ----------

फोटो

जिंदगी जीना आसान नही होता ।
बिना संघर्ष कोई महान नही होता ।
सूरज चाँद रहेंगे दुनिया में जब तक ।
नही भूलेगा समाज आपको तब तक ।।

शोकसभा - तिथि - --------- समय - ---------- स्थान - ----------

शोकसभा का सूत्रसंचालन -

सूत्रसंचालन किसी भी कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक है। सूत्रसंचालन के कारण असंख्य कार्यक्रम यशस्वीता के साथ पूर्ण होने है। किंतु शोकसभा का सूत्रसंचालन होना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। शोकसभा का सूत्रसंचालन करना भी एक आसान है। शोकसभा के सूत्रसंचालन हेतू अत्यंत अलग कौशल आत्मसात कर उसका प्रयोजन करना होता है।

सूत्रसंचालन करने हेतू विविध पैलूं की जरुरत होती है। जैसे अध्ययन जानकारी पूर्वानुभव आदि प्रयोग कर यश संपादन किया जा सकता है। साथ-साथ प्रसन्नता भी होनी जरुरी है। संवेदनशील होना भी जरुरी है। दुसरों में समा कर दु:ख की तीव्रता करने मे मद्द करे।

आवाज का चढ उतार होना आवश्यक है। किंतु आवाज की स्वातंत्र्यता भी होना चाहिए। यह शोक यह शोकसभा का स्थायीभाव है। इसलिए पूर्व तैयारी करना अशक्य नही है। किंतु संस्कृत पद पे ज्ञानेश्वर के वचने, संत रामदास पद, एवं दासबोध के अंतर्गत के चोंपाई, यह सूत्रसंचालक को आना जरुरी है। भारतीय जीवन के मृत्यू का सत्य स्वरुप समझ लेना आवश्यक है।

सूत्रसंचालन गंभीरता के साथ अपनी प्रस्तुतीकारक करे। धैर्यता से शोकसभा का प्रासंगिक गांभीर्य ध्यानपूर्वकता से आगे लेकर जाए।

मराठी भाषा : विकास, संवर्धन व एवं भाषिक कौशल्य इस ग्रंथ मे डॉ.नरेंद्र मारवाडे एवं डॉ.सदाशिव सरकटे इन्होंने शोकसभा संदर्भ पृ.१४२ पर किया है।

सूत्रसंचालन के प्रकार कहते हुए उन्होंने शोकसभा आयोजन संबंधी विचार व्यक्त किए है। राजकीय नेता समाजसेवक, स्वातंत्र्यसेनानी, शिक्षा, संख्यावाचक, व्यावसायिक, सामाजिक, प्रतिष्ठित, व्यक्ती अधिकारी आदि. मृत्यूप्रसंगी शोकसभा आयोजन किया जाता है ऐसे कहकर कार्यक्रम सुत्रसंचालन पर नियोजन का कार्यभार आता है। गंभीरता से सूत्रसंचालन करे। जिस व्यक्ति का निधन हुआ है उस व्यक्तिका निर्देशन आदरयुक्त करे सूत्रसंचालन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण दिग्दर्शन किया है इसे महत्व है।

सूत्रसंचालन पर प्रत्येक सामाजिक कार्य की जिम्मेदारी आकर सभा है। यहां उन्हें यह कार्य बडे जिम्मेदारी एवं गंभीरता से पुरा करना है।

व्यापक जीवनदर्शन का अंतिम भाग जितना आवश्यक एवं संस्कारक्षम ऐसा ही हो, यह ध्यान में लेकर आदर्श निर्मिती कैसी हुइ एवं उसका सामाजिक दृष्टी से कितना महत्वपूर्ण है।

ज्यादा भाष्य न करते हुए शोकभावना का प्रवाहानया रखते हुए सूत्रसंचालक यह कार्य करें इतनी ही अपेक्षा है।

शोकसभा का निवेदन -

शोकसभा का निवेदन करनेवाले निवेदक ने अपनी बोलचाल की भाषा, निवेदन यह अत्यंत भावनाप्रधान पध्दतीसे किया जाना चाहिए। शोकरस का पूर्ण कार्यक्रम होने तक कायम रहे इसका विचार करे। उसके साथ उसके भाषा मे स्पष्टता, सत्यता, प्रमाणिकता होना जरुरी है। उसका निवेदन यह रसभरा होना चाहिए। शोकात्मभाव प्रकट करनेवाली काव्यपंक्तिया संकलन ऐसे व्यक्ति के पास होना जरुरी है। निवेदक स्वतंत्र, ऐसी शैली आत्मसात कर सकता है। यह निवेदन रसभरा होना जरुरी है।

शांततापूर्ण वातावरण से इस कार्यक्रम में गंभीरतासे दु:ख, शोक, रंग स्पष्ट हो इसमें कुछ शक नही। निवेदकने ग्रंथसंदर्भ, पूर्वानुभव आदि का अवश्य प्रयोग करे। और अपना निवेदन दुसरी ओर ना जाए इसका ध्यान रखे।

❑❑❑

४. शोकसभा : इतिहास एवं परंपरा

शोकसभा के आयोजक ने मृत व्यक्ति के जीवन कुछ सार्वजनिक क्षणो को मूर्त रुप प्रकट करना आवश्यक ही है। उस व्यक्ति का कार्यकर्तृत्व का यह आलेख अगली पिढी को प्रेरणा देनेवाला हो यह व्यक्तिदर्शन चित्र, स्लाइडशो, लघुपट आदि विभिन्न पध्द्तीयों से रख सकते है। साथ-साथ विविध वक्ता भी आपने वक्तृत्व से प्रभावी रुप से मृत व्यक्ति के दर्शन श्रोता सन्मुख रख सकते है। मृत व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण प्रसांगो का वर्णन करने का कौशल्य जिसके पास है वे अच्छी तरह से व्यक्तिदर्शन कर सकते है।

व्यक्ति दर्शन करते समय कार्यकर्तृत्व, स्वभाव वैशिष्ट्ये, सामाजिक कार्य, सुख एवं विशाल हेतु किया हुआ संघर्ष, ईमानदारी, जीवन के प्रति निष्ठा, राष्ट्रनिष्ठा आदि सभी का वर्णन व्यक्ति दर्शन में आता है। व्यक्ति दर्शन प्रभावशाली एवं प्रवाहमान कर सकते है। आयोजक ने पूरी गंभीरता से यह आयोजन करना जरुरी है। व्यक्ति दर्शन करते समय सिर्फ उसका प्रौढत्व कथन ना करे तो व्यक्ति के अंतर्गत की इन्सानियत कैसी थी वे भी कहना जरुरी है।

संस्कार व्यक्त करते समय सद्गुणों का कथन गुणवृध्द्री, समाजोपयोग्य आदि चीजों का व्यक्ति दर्शन मे जरुरी है। मृत्यु पश्चात वैरभाव समाप्त होता है यह ध्यान लेते

हुए मृत व्यक्ति के दर्शन मे भव्यता दिव्यता कैसी तो यह प्राधान्यरुप से विचार सहभागी व्यक्ति ने करना चाहिए एवं स्मरण करे।

व्यक्ति दर्शन के कारण व्यक्ति का समाज पर उस क्षेत्र के अंतर्गत स्थान अबाधित रहे। जनसामान्य की भावनाएं, लोकभावना की इच्छा रखकर व्यक्ति दर्शन करे इतना ही भाव आयोजक रखे।

कर्तृत्व प्रकटीकरण :

शोकसभा के आयोजक ने मृत व्यक्ति का कार्यकर्तृत्व व्यापक रुप से समूह सम्मुख लाने हेतू शोकसभा एक माध्यम या साधन रुप से प्रयोग मनाए तो वे औचित्य रुप से योग्य है। मृत व्यक्ति साहित्य क्षेत्र से संबंधित है तो अच्छा या चित्रपट क्षेत्र से व्यक्ति हो जी विविध व्यक्तिरेखाओं की तस्वीरें हम मंचपर या अन्य स्थानों पर प्रयोग कर सकते है। रेखांकित किए चित्रशिल्प समूह हेतु उस समय आयोजक ने व्यापक समुह को देखने हेतु उपलब्ध किए तो वे उपयुक्तही हो।

मृत व्यक्ति पर जीवन समूह हेतु कार्य हो और कर्तृत्व जनता के सम्मुख आना ही चाहिए।

मृत व्यक्ति ने कर्तृत्व से अनेक लोगों को प्रेरणा मिल रही हो तो उसका प्रकटीकरण आयोजक अवश्य करे। वे व्यापक समाजहित हो जन हित सामने रखकर ही करे।

बहुत बार नभ की तरह निरभ्र प्रकाशमय व्यक्ति हमारे साथ होती है किंतु उनका बडापन हमे समझने हेतु अपना सान कक्षा एवं ऐहसासों की कक्षाओं को फैलाने की जरुरत होती है। वे कार्य ऐसे समय पूर्ण करना आसान नही होता।

कर्तृत्व प्रकटीकरण यह प्रौढत्व प्राप्त करने के लिए नही हो सत्यदर्शन हेतू है आयोजक यह ध्यान में रखे।

व्यक्ति संपन्नता :

व्यक्ति के निधन पश्चात हम शोकसभा आयोजित कर रहे है तब वे व्यक्ति इस कार्यक्रम में संपूर्णता प्रकट हो इस प्रकार का नियोजन आवश्यक है।

व्यक्ति का श्रेष्ठ कार्य, राष्ट्रीय कार्य, सामाजिक, लोकसांस्कृतिक कार्य, वर्णन, वैभव, जीवन संघर्ष, अध्यात्मिक वैभव आदि चीजों के कारण व्यक्ति का संपनत्व नजर आयेगा।

स्वभाव वैशिष्ट्ये लेखन विशेष नाविन्यपूर्ण दृष्टी, नवनिर्मिती, सुप्तशक्ती, अष्टपैलुत्व आदि संपन्नता के स्त्रोत है।

दान, दया, क्षमा आदि गुणों का व्यक्तिमत्व में स्थान ही संपन्नता का प्रतीक है।

जीवननिष्ठा, आत्मनिष्ठा, समाजनिष्ठा एवं राष्ट्रनिष्ठा जीवन में स्वीकार किए है इससे ही व्यक्ति का बढेपण नजर आता है और वे प्रकट हो।

संक्षेप में उस व्यक्तिमत्व के अंतर्गत प्रेक्ष गुणो का आदर्श समाज के सामने आए ऐसा प्रयास आयोजक से अपेक्षित है वे व्यक्ति संपन्नता से एवं समग्रता से प्रकट हो इससे संयोजक का हेतू प्राप्त हो।

लोक सहभाग :

शोकसभा हेतु आए हुए सभी लोग बंधुत्व से वेधे हुए है। सभी का कार्यक्रम मे सहभाग रखना आवश्यक है। वे श्रोता ही रहेंगे सहभागीयों मे स्त्रिया, पुरुषें के साथ साथ नवयुवक, वृध्द्, बालक आदि सभी का समावेश है।

शालेय विद्यार्थी को सहभाग लेते समय एक से चार वर्ग के घटक प्रतिमा दर्शन के लिए ले। उन्हे पूर्ण समय वहां बैठने ना दे। क्यो कि उनका लक्ष विचलित होता है। प्रसंगका गांभीर्य उन्हे समझ नही पायेंगे। किंतु कक्षा पाचवी से स्नातक समूह सहभाग ले रहे है ना व उनका सहभाग अलिप्त शिस्तता से एवं संयम से होना आवश्यक है।

छोटे बालक ऐसे कार्यक्रम में साथ लेकर जाने पर विचार करे इस कारण गंभीरता और शांतता नही रह पायेगी। साथ महाविद्यालयीन विद्यार्थीयों को भी इस शोकसभा की गंभीरता एवं शांतता समझाकर देना अच्छा होगा।

जिम्मेदारी का एहसास :

शोकसभा यह अत्यंत गंभीर एवं शोकरसपूर्ण कार्यक्रम है इसका ध्यान रखकरही आयोजक इसकी जिम्मेदारी संभाले यह जिम्मेदारी आयोजकपर होने स्वरुप से आनेवाली है। व्यक्तिगत जिम्मेदारी एवं सामूहिक जिम्मेदारी इन्ही दोनो सीमाओं पर वे स्वीकार करनी होगी।

आयोजक को ही मंचपर पिछे व आगे श्रोता, सहभागी लोगो की जिम्मेदारी लेनी होगी। उसके लिए जिम्मेदारी व नजदीक से कार्यकर्ताओं समुह या संच तैयार रहे। जिम्मेदारी का विभाजन कर कार्य को विभक्त करे । स्वयंसेवकोंका एक संच तत्पर रहे, सभी ने सामूहिकता का ध्यान रखे। आयोजक को बार बार इसका ध्यान कर के दे इससे कार्यक्रम अच्छी तरह से हो जाएगा।

वक्ता भी जिम्मेदारी से अपना कार्य करे। अपना समय, उस क्षेत्र का अधिकार, मृत व्यक्ति का कार्य आदि सभी बातो का ध्यान रहे और वहीं बात करे। अन्य बाते ना कहे।

सहभागी को बैठने हेतु कार्यक्रम में जिम्मेदारी से भाग ले। निजीकरन हो रहा है इस कारण किसी भी प्रकार के बोलचाले, इशारे, ना करे।

शोकसभा में प्रत्यक्ष सहभाग सभी का है यह ध्यान रखे। आयोजक, सूत्रसंचालक, वक्ता, सहभागी, ध्यनि व्यवस्थापक, वाद्यवृंद, छात्रो, कुटूंब, प्रसिध्दी विभाग के प्रतिनिधी सभी को इसकी जिम्मेदारी का ध्यान रखते हुए कार्यक्रम में सहभागी होना जररुरी है।

समूह जिम्मेदारी :

शोकसभा आयोजित करना यह सामाजिक घटना है। मृत व्यक्ति जिस क्षेत्र से है उस क्षेत्र के समूह पर जिम्मेदारी होती है। साहित्य, संगीत, कला, नाट्य, राजकारण, धर्मकारण ऐसे किसी भी क्षेत्र के मृत व्यक्ति हो, उनका सामाजिक कार्य यह व्यापक एव विशाल होता है। उसकी सामूहिक जिम्मेदारी लेकर शोकसभा का आयोजन करे।

आयोजक, सहभागी, वक्ता एवं श्रोते, सामाजिक कार्यकर्ते, स्वयंसेवक आदि सभी को सामूहिक जिम्मेदारी का ध्यान रखकर इस कार्यक्रम में अपना सहभाग करे। समाज मे ऋण व्यक्त करणे हो एवं अगली पिढी को मृत व्यक्ति के सामाजिक कार्य का एहसास प्रकट करने हेतू ही शोकसभा महत्वपूर्ण है। इस कारण आयोजक इस तरफ ध्यान दें।

सभी लोगों ने कार्य करना चाहिए। किसी भी प्रकार का संकोच मन में ना रखे। वही सच अर्थ में श्रध्दांजली होती है। आयोजक ध्यान दे और सभी का सहयोग पाकर शोकसभा यशस्वी करे।

समय का ध्यान -

शोकसभा के आयोजकने समय का ध्यान रखकर इस कार्यक्रम की रुपरेखा तैयार करे। योग्य समय एवं स्थान निश्चित करे। समयसूचकता से किसी भी आयोजन का ध्येय प्राप्त कर सकते है। 'योजकः तत्र दुर्लभः' ऐसा कहा गया है। शोकसभा आयोजक के सम्मुख समय का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है।

कार्यक्रम का समय सभी को सुलभ एवं आसान हो ऐसा रखे। मृत व्यक्ती के कार्यकर्तृत्व का प्रकटीकरण करने का यही सही समय है। किंतु शोकसभा कार्य पूर्ण करने हेतू कार्यहेतू निधी लोकवर्गणी जमा करना यह भी आयोजक को करनी पडती है। मृत व्यक्ति को हम फायदा उठा कर अपना लाभ करे ऐसा ना हो। इस कारण कार्यक्रम को समय पर शुरू करे।

सावधानता -

शोकसभा आयोजक सावधानता से यह आयोजन किया जाना चाहिए। सावधानता यह कार्य पूर्णत्व की और ले जाती है।

यह सावधानता कृती, शब्द एवं अभिनय आदि के बारे में हो। शब्दप्रयोग करते समय मृत व्यक्ति को कम शब्दों से ना वर्णन करे। अन्यथा ध्यान सूत्रसंचालक एवं वक्ता यह दोनो संभाले।

मंचपर बैठना, एक दुसरों के साथ गपशप करना, हंसना, आदि कृतियों से सावधानता रखे।

वक्ता दु:ख को या अभिनिवेश से मृत व्यक्ति के संबंध लोकमत मे विशेष भाव निर्माण हो ऐसा अभिनय ना करे।

सहभागी इस कार्यक्रम में पूर्णत: सावधानता रखे। श्रध्दांजली अर्पण करना, दर्शन आदि कार्यक्रम पुरा होनेतक सभागृह या मैदान से दूर जाने तक सावधानता रखे इससे आयोजक का हेतू पूर्ण सफल हो।

आत्मा के अमरत्व के संबंधी गीता के श्लोक -

१. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय।
नवानि गृण्हतिलनरोती पराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा।
न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

श्रीमद् भागवत गीता (अ.२ श्लोक२२)

२. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावक:।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुत:।।

गीता (अ.२ श्लोक २३)

३. अच्छेद्यो यमदाहयो यमक्लेद्यो शोष्य एव च।
नित्य: सर्वगत: स्थाणू रचलो यं सनातन:।।

गीता (अ.२ श्लोक २४)

देह त्यागिता किर्ती मागे उरावी।
मना सज्जना हेचि क्रिया धरावी।
मना चंदनाचे परी त्वा झिजावे।
परी अंतरी सज्जना निववो।।८।।

(मनाचे श्लोक, समर्थ रामदास स्वामी)

मना मानसी दु:ख आणू नको रे।
मना सर्वथा शोक चिंता नको रे।
विवेके देहेबुध्दी सोडूनि द्यावी।
विदेहिपणे मुक्ति भोगीत जावी।।१२।।

(मनाचे श्लोक, समर्थ रामदास स्वामी)

जीवा कर्मयोगे जनी जन्म झाला।
परी शेवटी काळमुखी निमाला।
महाथोर ते मृत्युपंथेचि गेले।
कितीएक ते जन्मले आणि मेले।।

(श्लोक १४-१५)

(मनाचे श्लोक, समर्थ रामदास स्वामी)

मरे एक त्याचा दुजा शोक वाहे।
अकस्मात तोही पुढे जात आहे।
पुरेना जनी लोभ रे क्षोभ त्याते।
म्हणोनि जनी मागुता जन्म घेते।।

(मनाचे श्लोक, समर्थ रामदास स्वामी)

संत तुकाराम गाथा

१. सुख पाहतां जवापाडें। दु:ख पर्वताएवढे।।१।।
धरी धरी आठवण। मानी संतांचे वचन।।धृ.।।
नेले राञीने ते अर्धे। बाळपण जरा व्याधे।।२।।
तुका म्हणे पुढा। घाणा जुंती जसी मूढा।।३।।

(अभंग क्र. ८८)

२. मोले घातले रडाया। नाही आसुं आणि माया।।१।।
तैसा भक्तिवादी काय। रंग बेगडीचा न्याय।।धृ.।।
वैठी धरिल्या दावी भाव। मागे पळायचा पाव।।२।।
काजव्याच्या ज्योती। तुका म्हणे न लगे वाती।।३।।

(अभंग क्र. २४८७)

शोकसभा व्यक्त - ऐतिहासिक पत्र -

क्र.४३

मैं ही आपका बाजीराव।।

(बाजीराव की और से मृत सैनिक के माँ को)

(११ जनवरी १७३९, शके १६६० पौष व.१३)

गंगा जान्हवी समान मातोश्री वेणूबाई काकी पिताजी सेवा अपत्य बाजीराव बल्लाळ नमस्कार पौष वद्य १३, पावेतो स्वत:लिखित करे। विशेष पौष शु:११ स. तारपुर पे आक्रमण हुआ उस समय बाजी भिवराव के मुख पर गोली लगने के कारने वे स्वर्गवासी हुए। ईश्वर ने यह अनुचित किया। आपको बडा शोक प्राप्त हुआ। हमारा भाई तो मृत हुआ उसे पिताजी, दु:ख का परिमार्जन विवेक करे। उनका बेटा चिमणाजी आप्पा है। किंतू हमारा भाई मृत हुआ, उपाय नही उन्हे चिमणाजी भिवराव यह भेज दिए है। वे जैसा कहे वैसा सुने संकिर्ण में ही आपका बाजीराव हुआ ऐसा विवेक कर संभाले। मुझे पर दृष्टी रखे। ज्यादा कुछ लिखे ठीक नही है।

(राजवाडे, खंड ३, ले.१६७), प्राचीन मराठी गद्य, संपा : डॉ.शं.गो.तुळपुळे, व्हीनस प्रकाशन, पुणे, पुनर्मुद्रण सप्टेंबर १९९३

शोकसभा का इतिहास -

शोकसभा यह हमे आज नाविण्यपूर्ण एवं, हेतूपूर्वक कि जानेवाली सभा लग रही हो तो वे अर्धसत्य है। शोकसभा को प्राचीन काल से इतिहास है। शोकसभा को प्राचीन काल से इतिहास कहना यहाँ कठिण है। लोकपरंपरा एवं उसके स्वरुप एवं वैशिष्टये से लोगों के मन दृढ रहा है। शोकसभा की ऐसी लोकपरंपरा यह महाभारत तक लेकर जाएगी। और वो पांडव के युध्दपश्चात धर्मराज जिस समय (धृतराष्ट्र गांधारी) चाचा चाची का सांत्वन करने हेतू जाते है वे भी एक प्रकार से शोकसभा ही है।

श्रीकृष्ण निजधामको जाने के बाद उध्दव समिप गोपिकाओं ने किया हुआ विलाप वे भी एक शोक रहा है। संत एकनाथजी ने इस शोक का वर्णन श्री एकनाथ भागवत में किया है।

अंत्यविधी में दहनविधी एवं रक्षा विसर्जन इस दोनों क्रिया सामुहिकता से कि जाती है। रक्षा विसर्जन को भी ऐसा शोक प्रकट करनेवाली सभा होती है। अत्यंत नजदिक दूर हो रहे है तो उसका हात लगे इस कारण रक्षा विसर्जन अनेक स्थानों पर तिसरे दिन करते है। कहा दुसरे दिन ही विधी करते है। अपने अपने गांव यह प्रथानूसार, परंपरानूसार मर्तिका का पूर्ण विधी सामूहिकता से किया जाता है।

संत ज्ञानदेव के समाधी पश्चात संत नामदेव मंडळीयोने एकरुप से शोक व्यक्त किया, इसकां संदर्भ संत साहित्य मे आता है।

संतोंने लोकपरंपरा संभालने का कार्य क्या है।

राजा के मृत्यूपश्चात ऐसी शोकसभा होने के अनेक उदाहरण इतिहास मे है। सच तो लोकपरंपरा का इतिहास लेखन स्वरुप में उपलब्ध नही है। तो मौखिक परंपरासे समाज मे रुढ होता है। अब पाश्चातो के प्रभाव से उसमे कुछ बदलाव आए है यह ध्यान में ले।

शोकसभा का इतिहास लोकपरंपरा से जैसा प्रकट होता हो उससे उसका स्वरुप भी निश्चित होता है।

व्यापक ऐसी परंपरा का इतिहास लिखना ही कठिण है। इस कारण उसका संबंध देखना जरुरी है। शोकसभा आयोजन से लेकर पूर्ण होनेतक परंपरा के सहाय्य से व्यापक कार्य समाज मे किया जाता है।

शोकसभा का इतिहास स्पष्ट करते समय महाराष्ट्र के प्रसिध्द विद्वान एवं लेखक आचार्य प्र.के.अत्रे कहते है, "स्मशान मे भाषण करने का यह उद्योग कब से शुरू हुआ ?" सबसे पहले मेने स्मशान मे भाषण सुने भांडारकर एवं टिलक का भी। गोखले की मृत्यू बाद भीड बहुत थी। ध्वनिक्षेपक उस समय नही थे। भांडारकर को प्रत्येक वाक्य देवधर बडे जोर से ले कहते थे। टिलक का भाषण पूर्ण सुनाई दिया। स्मशान मे शोकसभा के भाषण उन्होंने कहा हुआ उल्लेख आधुनिक युग के पहिले ही है कहे नही सकते।

गोखले के मृत्यू पश्चात शोकसभा यह आधुनिक युग की पहली शोकसभा है ऐसा कहना उचित होगा।

माधवराव पटवर्धन मृत्यूपश्चात भी साहित्य सम्राट तात्यासाहेब केलकर स्मशान में आए थे ऐसा आचार्य अत्रे कहते है।

आचार्य अत्रे जी के सुक्ष्म निरीक्षण का इतिहास के दृष्टी से महत्वपूर्ण ऐसा फायदा है की परंपरा शोकसभा आयोजित करने का आगे ही दसवे दिन गंगापर उत्तरक्रिया करने हेतू सभी एकत्र आते है। इससमय शोक व्यक्त कर के मृत व्यक्ति के कार्यकर्तृत्व, स्वभाव वैशिष्टये को सभी याद करते है।

इस पश्चात काकस्पर्श हेतू सभी एकत्र आते हे। तेरह दिन गंगापूजन एवं उदकशांती हेतू सभी आते है। उसे भी हम शोकसभा कहते है। उददे्श वही होता है।

शोक व्यक्त करना, स्मृती याद करना, ऋण से उतराई होना, इस लिए सभी आते है। मृत व्यक्ति के वर्ष श्राध्द दिन पुन: सभी आते है एक प्रकार से शोकसभा होकर मृत व्यक्ति के सभी विधी वर्ष पश्चात पूर्ण होते है। लोकपरंपरा मे ऐसा शोकसभा देखने मिलती है।

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज इन्होंने ग्रामगीता इस ग्रंथ मे अंत्यसंस्कार पर लेखन किया है। अंत्यसंस्कार के विधी के बारे में चर्चा यहां कि है। शोकसभा का विचार उससे आता है। सन १९५५ को साधारणत: इस ग्रंथ का लेखन इन्होंने पूर्ण किया वे कहते है।

"मृत्यूहि सुमंगल समजावा।
स्मशानयात्रेस सहयोग द्यावा।
दिंडीघोषे मार्ग सुधारावा।
जाणाराचा।।२६।।
अभद्र, विद्रुप, किळसवाणी।
न ठेवावी रीत कुणी।
श्रध्दांजलीच्या भाषणी।
भूषवावे प्रसंगी।।२७।।"

ऐसा कहा हुआ वे सार्थक है। शोकसभा का शुरूवात स्वातंत्र्यपूर्व समय में ही हुई है। उनका इस के आगे ग्रंथ मे भाषण है। अंत्ययात्रा यह सहयोग से हो ऐसा वे व्यक्त करते है। भाषण मे दु:ख ना प्रकट करे तो उसके अच्छे कर्मो के बारे में कहे और शोकसभा पूर्ण करे ऐसी उनकी इच्छा है।

अंत्यसंस्कार पश्चात शोकवार्ता सभी को समझे इस कारण वे कहते है -
शोकवार्ता सकळांसि कळावी।।
म्हणोनि एकदा पत्रे टाकावी।
यापरी सुधारणा करावी।
समाजाची।।अ. २२ - ४४।।

शोकसभा सभी को समझने हेतू पत्र भेजे। शोक अन्य को समझे उसका भी महत्व का वर्णन वे करते है। समाज मे सुधारणा हो ऐसी उनकी इच्छा है। तेरहवे दिन पर बोलते हुए कहते है -

विवेके सावरोनि भावना।
करावी तेराव्या दिवसी प्रार्थना।

सर्व लोकांसह जाणा।

भजनानंद चाखावा।।

अंत:करण विवेक से शोकभावना ग्यारह एवं तेरह दिन सामूहिक भजन संध्या रखे। भजन संध्या का आनंद सभी ले। स्मृती जतन करे उत्तर आचरण का संकल्प करे। आगे वे श्राध्द के बारे मे कहते है -

किंवा त्याचे गुणवैभव।।

श्रध्देने आठवावे सर्व।

हेचि श्राध्द असे अपूर्व।

श्रध्दांजली रुप।।अ.२२-८१।।

मृत व्यक्तीका गुणवैभव जरुर याद करे, वे श्रध्दा से वर्णन करे, यह श्राध्द सच एक अपूर्व है। यही सही अर्थ मे श्रध्दांजली है। ऐसे वे मानते है।

समाधी के बारे मे अत्यंत स्पष्ट कल्पना है, वे कहते है -

मानव असो वा पशु- पक्षी।

न कराव्या त्यांच्या समाधि-साक्षी।

जिवंत समाज ठेवोनि लक्षी।

करावे कार्य सुस्थितीचे।।अ.२२-११५

समाधी करने के अलावा जिवंत समाज के ओर देखकर कार्य करे।यहा उनके दूरदृष्टीका परिचय होता है। समाधी करना यह भी एक आसक्ती का लक्षण वे मानते है। उसके अलावा स्मरण के लिए (तसवीर) प्रतिमा रखे ऐसा वे कहते है।

मृत्यू पश्चात अंत्यसंस्कार, शोकसभा, श्रध्दांजली भाषण, शोकवार्ता हेतू पत्र भेजना,विवेका महत्व, श्राध्दरुप एवं श्रध्दांजली, तेरह वे दिन का कार्य, समाधी विषयी के विचार यह देखने शोकसभा का सभी घटकों का यह सुक्ष्म एवं स्पष्ट स्वच्छ विचार ऐतिहासिक दृष्टी से महत्वपूर्ण है।

शोकसभा का इतिहास मे इस अध्याय को स्वतंत्र महत्व है। इस कारण यहा पर उसका विचार किया है।

विस्तार हेतू अनेक पंक्तीयो के उदाहरण देकर विस्तृत लेखन शक्य है। किंतू शोकसभा की ओर एवं उसके इतिहास की ओर ध्यान दे। इतना मर्यादित हेतू प्रस्तुत ग्रंथ के लिए आवश्यक है। इसी कारण यहा पर विचार किया है।

❑❑❑

५. शोकसभा आयोजन की पध्दती

मंच व्यवस्था -

शोकसभा आयोजक ने मंचपर कम से कम तीन एवं ज्यादा से ज्यादा दस लोक बैठ सके इतनी व्यवस्था करे। मंचपर दस से ज्यादा सदस्य ना रहे। उस में सभी वक्ता ना हो। सामने पाणी के बॉटल, गुच्छ रखने की जरुरत नही है। मंचपर दाहीने स्थान पर मृत व्यक्ति की तस्वीर रखे। इतना ही काफी है।

मंचपर बोलने हेतू एक डायस रखे। उसकी मदद से निवेदक निवेदन कर सके। सूत्रसंचालक कार्यक्रम संभाले।

मंचपर शोभा, सौंदर्य बढाने की जरुरत नही है। पिछेवाले पडदे पर शोकसभा आयोजन संदर्भ या प्रतिमा का डिजिटल बॅनर चलेगा। और उसका स्थान योग्य हो।

आसन व्यवस्था -

शोकसभा आयोजक स्थलनिश्चिती करने पश्चात सहभागी लोगों की बैठने की व्यवस्था कैसी करे इसके बारे में सोचे। सभागृह मे आसन व्यवस्था है तो वे योग्य है या नही यह देखना जरुरी है। आसनव्यवस्था जमीनपर, कार्यालय या मैदान मे करती है तो वहाँ मॅट डाले। ज्यो डालने हेतू आसान हो।

समयप्रसंगी ताडपत्री भी डाले। महत्वपूर्ण यह है की, सहभागी सभी को बैठने की सुविधा एक समान हो। स्त्री-पुरूष को बैठक व्यवस्था भिन्न हो यह आयोजक ध्यान रखे।

शोकसभा हेतू आयोजक प्रत्येक चीजों का ध्यान रखे इस कारण यह सूचित किया गया है।

ध्वनिव्यवस्था -

शोकसभा हेतू आयोजक ध्वनि व्यवस्था की ओर ध्यान दे। इस के हेतू ध्वनिव्यवस्थापक की नियुक्ती करे। यह कार्यक्रम स्मृतीपर है इसका ध्यान रखना आवश्यक है।

ध्वनिक्षेपक का आवाज कर्णकर्कश, ज्यादा तीव्र, बीच मे ही जोर से सिटीया बजे ऐसा ना हो। किंतु सभागृह के अंतिम बैठनेवाले व्यक्ति तक सुनाई दे ऐसा हो।

माईक भी दो या तीन ठीक हो। किंतू उनके प्लग ध्वनिव्यवस्थापक पहले ही जांच ले। काव्यगायन, गीतगायन हो तो वाद्यवृंद हेतू माईक सिस्टीम पहले ही आयोजित योग्य स्थान पर हो।

ध्वनिव्यवस्था की लिए और एक महत्वपूर्ण बाते ध्यान मे रखे कि वे कार्यक्रम के दौरान (विद्यूत) बीजली खंडित ना हो।

जनरेटरकी सुविधाएं कार्यक्रम की स्थान पर आवश्यक है। लोडशेडींग का समय देखकर ही कार्यक्रम का आयोजन किया जाए।

ध्वनिसंयोजन करनेवाली व्यक्ति यह कुशल हो। तब ही ध्वनिव्यवस्था अच्छी होगी। कार्यक्रम की हेतू पूर्तता होगी ऐसा विश्वास है।

दीप -

शोकसभा के मंचपर आयोजक मृत व्यक्ति के प्रतिमा सम्मुख दीप रखे या ना यह पहले ही निश्चित करे।

दीप रखना है तो सभी प्रज्वलित करणे से एक या दो ही ज्वलंत रखे। हिंदू परंपरा मे दीप रखा जाता है। अन्य परंपराओ में दीप का औचित्य नही है। दीप प्रज्वल अतिथीयों को द्वारा करने की जरुरत नही है।

दीप अगर रखना है तो उसके लिए आवश्यक सामग्री वहां उपलब्ध हो। यह पूर्व तैयारी पहले ही करके रखे। अंतिम क्षणों मे वे ना करे।

दीप यह साक्षीरूप है इस कारण वे आवश्यक है। और वे सुशोभित करना

उचित नही है। दीप यह कर्म साक्षीन्यदेवता सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है इस कारण वे अवश्य लगाए।

पुष्प / पुष्पमाला -

शोकसभा आयोजन करने समय आयोजक ध्यान रखो की इस कार्यक्रम हेतू स्वागत पर माल्यार्पण नही होता, सिर्फ मृत व्यक्ति के मंचपर तस्वीर को रखे। और उस तस्वीर को पुष्पमाला चढाए। और ध्यान रहे की तस्वीर पुष्पमाला चढाने के बाद स्पष्ट रुप से दिखे। तस्वीर को पुष्पमाला चढाने हेतू स्थान योग्य हो।

सहभागी लोगों, कार्यक्रम के अंत मे प्रतिमा दर्शन लेनेवाले है यह ध्यान में रखते हुए पुजा का आयोजन योग्य स्थान और संख्या में उपलब्ध होना आवश्यक है। इस कारण सहभागीयों को समाधान मिल सकेगा। पुष्पार्पण से समाधान मिलेगा। पुष्पचक्र यह सैन्य, पुलिसदल, राजनिती में पुष्पचक्र रखने की प्रथा है।

प्रमुख अतिथी या आमंत्रित व्यक्ति -

शोकसभा हेतू आयोजक ने कार्यक्रम हेतू किसे आमंत्रित किया है यह प्रश्न उत्पन्न होना नैसर्गिक है। इस समय कुछ प्रयत्न करना आवश्यक है। मृत व्यक्ति जिस क्षेत्र का है उस क्षेत्र के समाजमान्य, मान्यवर आधिकारी या पदाधिकारी इन्हें व आयु सें ज्येष्ठ हो या कनिष्ठ उन्हें आमंत्रित करे।

मृत व्यक्ति साहित्य, संगीत, चित्रकला, नाट्यकला, शिल्पकला, क्रिडा, उद्योग, कृषि, आरोग्य, समाजसेवक, राजकारण, या धर्मकारण ऐसा किसी भी क्षेत्र का हो उस क्षेत्र का अभ्यासक, संशोधक, कलावंत, आलोचक, अधिकारी, लोकप्रतिनिधी, पक्ष एवं संघटना के अधिकारी, उच्चपदस्थ आदि. शोकसभा हेतू प्रमुख अतिथी आमंत्रित कर सकते है। इस कारण मृत व्यक्ति के कार्य एवं कर्तृत्व आदि महत्व समझ आऐगा। आदर्शो की पूर्वपरंपरा एवं प्रवाहित हुई उत्तरपरंपरा ध्यान में आने हेतू मद्द मिलेगी।

इसके साथ कार्यक्रम में सहभागी होने हेतू किसे आमंत्रित करे ऐसा प्रश्न उत्पन्न हो सकताहै। उसके बारे में संक्षिप्त विचार यहा करेंगे।

शोकसभा हेतू कुटूंबीय, रिश्तेदार, मित्र अन्यं पडोंसी, सहकारी, विद्यार्थी, ग्रामस्थ, कार्यालयीन कर्मचारी, सेवक, शिष्य, संबंधित गावकरी, जिनका मृत व्यक्ति के साथ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से संबंध आया है ऐसे सभी को आमंत्रित करे।

आमंत्रण यह प्रसारमाध्यमों के प्रतिनिधी को भी देना आवश्यक है। प्रिंटमिडीया, इलेक्ट्रॉनिक मिडीया, आकाशवाणी, दूरदर्शन प्रतिनिधी इन सभी को देना आवश्यक है। आयोजक की यह जिम्मेदारी है।

समय का नियोजन -

शोकसभा आयोजकने संपूर्णत: नियोजन करते समय का महत्व जानकर वे कितने समय में पुरा करना है। कार्यक्रम का समय निश्चित करे। सुबह , दोपहर या संध्या के समय जिससे सहभागीयों को ध्यान रखे।

शोकसभा प्रारंभ से अंत होने तक एक या दोन घण्टो तक की निश्चित करे। क्यों कि दो घण्टो से ज्यादा चलनेवाले कार्यक्रम सहभागीयों को त्रासदायक लगते है। अब जीवन गतिमान हुआ है। दोन घण्टो तक बैठना है यह सोचकर ही कुछ लोग आने का छोड देते है।

इस समय में भी बोलने वाले व्यक्ति जादा नही होना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा तीन अथवा पाच दर्जानुसार अधिकार के अनुसार सहेतूक वक्ता का चयन करे। शोकसभा नियोजन में नियोजित वक्ता को बोलने हेतू योग्य समय के बारें में बताए।

गांभीर्यता -

शोकसभा आयोजक कार्यक्रम के प्रारंभ से अंत तक पूर्ण समय सभागृह, कार्यालय अथवा मैदान पर जहा का कार्यक्रम संपन्न हो रहा है वहा पर शांतता प्रस्थापित करे।

जिस व्यक्ति के मृत्यू पश्चात इस शोकसभा का आयोजन आयोजक ने किया है। इसकी गंभीरता उन्हें होनी चाहिए। और वे इस गंभीरता का अनुपालन करे और करने लगाए। इससे अपने आप गांभीर्यता होती है।

शोकसभा में प्रत्येक व्यक्ति अपनेआप ही गांभीर्यता से रहे। सच तो यह है की यह करने को किसी को मजबुर ना करे कि आप गांभीर्य रखे। इस आधुनिक युग के जीवनशैली कारण सांप्रत गांभीर्य रख नही पाते। इस सारे बाते ध्यान में रखकर कार्यक्रम औचित्य हेतू शांतता व गांभीर्य रखना चाहिए।

शोकसंदेश का पठन -

प्रसिध्द व्यक्तिओं के मृत्यू पश्चात अनेक लोगों के शोकसंदेश आते है। पत्र, फोन, ई मेल आदि द्वारा यह संदेश प्राप्त होते है। एस.एम.एस., एम.एम.एस. आदि से भी शोकसंदेश आते है।

आयोजक की जिम्मेदारी है की उन्होंने शोकसंदेश समिती की ओर वे दे। उनमें ज्येष्ठता का अनुक्रम लगाए। मृत व्यक्ति जिस क्षेत्र की है उस क्षेत्र के ज्येष्ठ व्यक्तिओं के शोकसंदेश महत्वपूर्ण होते है। मृत व्यक्ति के क्षेत्र से एक से अनेक संख्या से शोकसंदेश प्राप्त हूए है तो उनका नामोल्लेख करे।

पठन करने समय गंभीर आवाज एवं स्पष्टोचारित करना जरुरी है। वाक्य पूर्ण पढे। संदेश लोगों को समझे, वाचन हेतू महीलां, पुरूष ऐसे दोनों संदेशवाचक रह सकते है।

शोकसंदेश के पठन से व्यक्ति कितनी बडी थी यह तो समझता ही है। उससे ज्यादा कितना नुकसान हुआ है यह भी ध्यान में आता है।

शोकसंदेश का वाचन करते समय और एक महत्वपूर्ण बात याद रखे कि सर्व शोकसंदेश एक भाषिक नही होते वे विभिन्न भाषाओं से आए होते है। अगर वे अनुवाद उपलब्ध कर के सहभागीयों सम्मुख प्रस्तुत कर दे तो यथार्थस्वरुप से समझ पाऐंगे।

आयोजक को यह जिम्मेदारी स्वीकारणा क्रमप्राप्त है। यहा एक पर्याय उपलब्ध कर सकते है। हिंदी, अंग्रेजी, ऊर्दू आदि वाचक उपलब्ध होते है उन्हें भी कार्यक्रम में समाविष्ट करना आवश्यक है। किसी अन्य भाषा में शोकसंदेश के वाचन शक्य नही हुआ तो वे नामनिर्देशन करते हुए कार्यक्रम शुरू रखे। शोकसंदेश का वाचन गंभीरता से करे तभी उसकी परिणामकारकता नजर आएगी। शोकसभा में शोकसंदेश देने की प्रथा पंरपरा बहुत प्राचीन। आयोजक शोकसंदेश का वाचन अच्छी तरह से करे। संदेशवाहक की भूमिका संपूर्ण करे।

संगीत संयोजन -

शोकसभा आयोजक शोकसभा में संगीत का प्रयोग कितना, कैसा, करना है इसका संगीत संयोजन व्यावसायिक की ओर देना ही योग्य है आवश्यक है। जिस संगीत से दु:ख शोक भावना यह प्रतीत होते है उसी गीतों का एवं वाद्यों का प्रयोग वे करेंगे। संगीत से दु:ख वेग की प्रतीत बढेगी। दु:खद भावना तीव्र करे।

आयोजक दु:खद धून तथा स्वर कायम रुप से रखे तो अच्छा होगा। संगीत विद्वान को उसमे होनेवाले बदल, परिवर्तन समझ आए यही अपेक्षा। सामान्य व्यक्तियों को संगीतमय शोक नही समझ आएगा।

संगीत संयोजन यह शोकसभा का आत्मा है। आयोजक उसकी ओर सहेतूक से देखे। संगीत काय योग्य उपयोग करे ऐसा नम्रता से कहता हूं।

काव्य पंक्तिया वाचन / गायन -

शोकसभा मे बहूत बार मृत व्यक्ति कवी, साहित्यिक हो तो उनके ही द्वारा लिखित कविता की काव्य पंक्तियां, कविता मंचपर वाचन कर, गायन करे। जो उनके कार्यकर्तृत्व हेतू अच्छा होगा किंतु ऐसा उसका अर्थ नही है कि शोकसभा के आयोजन पर काव्यवाचन गायन होना जरुरी है।

संयोजक निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुए शोकसभा मे समावेश करे।

१. गायन हेतू समय

२. गायक का आवाज

३. परिणामकारकता

४. कितना आवश्यक

५. कम से कम वाद्यवृंद

६. गायन करने समय सहभागी संख्या

७. कविता चयन

आदि सभी बातों को प्रथम निश्चित करे और फिर समावेश करे। अंतिमक्षणों मे अनेक परिणामकारक काव्यं पंक्तियां खोडकर दीर्घ कविता पठन करते है।

आयोजक भी वह बडी जिम्मेदारी होती है। साहित्य का क्षेत्र छोडकर मृत व्यक्ति अन्य क्षेत्र के होने पर इससे दूर ही रहे।

गायन मे कोन से रस का परिपोष यहाँ होना जरुरी है इसका ध्यान रखे। नही तो करुण रस में शृंगार रस का मिश्रण होकर सहभागीयों पर अन्याय तो हो नही रहा है यह देखना आयोजक को आवश्य है।

इस कारण शोकसभा में काव्यवाचन सहेतूक, भावगर्भ, रसपरिपोष करनेवाले अल्पसमय मे योग्य परिणामकारकता निर्माण करनेवाले, कार्यक्रम का औचित्य भंग न होनेवाले हो।

संयोजक को यहा स्पष्टता, वाङ्मयीन, काव्य का अध्ययन होना आवश्यक होता है। तभी ऐसे कार्यक्रम का आयोजन करने हेतू, विचार हेतू चयन करेंगे।

स्तब्ध होने की अवस्था से पहले -

श्रध्दांजली अर्पण करने हेतू दो मिनिट स्तब्ध होने की परंपरा है। स्तब्ध होने से पहले आयोजक की ओर से निवेदक, सूत्रसंचालक ध्वनिक्षेपक के माध्यम से कुछ सूचना दे।

१. सभी अपना मोबाईल बंद करे या कंपन मोड पर रखे।

२. 'एक' ऐसा कहने पर स्तब्ध रहे।

३. 'दो' कहने पर समय समाप्त।

४. कृपया शांतता रखे।

आदि महत्वपूर्ण सूचना दे। अनेक बार श्रध्दांजली हेतू स्तब्ध अवस्था में रहने हेतूपूर्व सूचना न देते हूए कह दिया तो कुछ लोगों को परेशानी हो सकती है।

दो मिनिट ही सूत्रसंचालक सूचना दे।

प्रतिमा दर्शन -

शोकसभा की समाप्ती दर्शन से होती है। कार्यक्रम की समाप्ती करते समय सूत्रसंचालक प्रतिमा दर्शन के बारें मे अच्छे से सुचना दे। स्त्रीयों को पहले प्रतिमा दर्शन लेने दे और बाद में पुरुषोंने दर्शन ले।

पुष्पांजली देने हेतू एक व्यक्ति का चयन करे। पुष्प सभी को मिले इस कारण पहले से ही रखे। कार्यक्रम हेतू कितने लोग उपस्थित रहने वाले है इसका अंदाज लेकर प्रतिमा दर्शन की समय एवं स्थान निश्चित करे।

प्रतिमा दर्शन हेतू मंचपर जानेके लिए भीड ना करे। भीड को शांतता का आवाहन करे। प्रतिमा दर्शन आसान हो, दर्शन का समाधान हो, स्मृती मन में कायम रुप से रहे इसकारण प्रतिमा दर्शन आवश्यक है।

प्रसंग का गांभीर्य -

शोकसभा के आयोजक, इतर सदस्य, कार्यकर्ता, एवं स्वयंसेवक सभी ने शोकसभा प्रसंग का गांभीर्य ध्यान लेकर दिई हूई जिम्मेदारी का पालन करे। यह दु:खद, शोकव्याकुलता करनेवाला प्रसंग है। मृत व्यक्ति का कार्य कर्तृत्व इन्हें कही भी विद्रुपीकरण, विरुपीकरण ना हो इसका ध्यान रखे।

कृती प्रसंग का गांभीर्य भूलने का काम न करे। मंचपर वक्ता, कार्यकर्ता, इन सभी को गांभीर्य प्रत्यक्ष रखने हेतू कृती के द्वारा ही रखना होगा।

मृत व्यक्ति का क्षेत्र -

शोकसभा आयोजक मृत व्यक्ति का क्षेत्र और उस क्षेत्र से संबंधित उनका कार्य सर्वप्रथम ध्यान दे। मानवी जीवन मे असंख्य क्षेत्र है। कोई व्यक्ति सव्यसाची से दो दो क्षेत्र मे कार्य करते हुए नजर आता है। जीवन के क्षेत्र को सीमाएं नही होती।

मृत व्यक्ति किसी भी क्षेत्र का हो उसके कार्य, कर्तृत्व व्यापक ऐसे समूह व्याप्त होना है। जैसे भी चित्रकला व्यापक क्षेत्र है, किंतू उसमें व्यंग चित्रकार को हरदिन वर्तमान पत्रकी उपस्थिती के कारण अपनेआप प्रसिध्दी मिलती है और यह कार्य अन्य लोगेां तक पहुंचता है।

क्षेत्रों के बारे में अब बहुसंख्य ज्ञानशाखा है और वे विशाल रुप में उपलब्ध है।

शोकसभा के आयोजक उस क्षेत्र प्रसिध्द, प्रसिध्दी, प्रमुख ऐसे सभी को शोकसभा का महत्व बताते हुए सहभाग लेने हेतू प्रोत्साहित करे।

वातावरण निर्मिती -

शोकसभा हेतू वातावरण निर्माण करने की जिम्मेदारी आयोजक की होती है। शोकसभा लेने की जरुरत से लेकर शोकसभा पूर्ण होने तक शोकभावना स्थिर रखने की जिम्मेदारी आयोजक की है। उसके लिए सभी का सहकार्य अपेक्षित है।

कार्यकर्ता व स्वयंसेवक, लाभार्थी, शिष्य, सदस्य इन सभी को महत्व बताऐं। शोकसभा में कुटूंब, संस्था सदस्य, संघटना सदस्य, कार्यकर्ता, अनुयायी, सहाध्यायी, एवं सहप्रवासी ऐसे सभी होते है। उन्हें साथ लेकर ही हम शोकसभा आयोजन कर सकते है। और उस समय ही वातावरण निर्मिती शक्य हो पाएगी।

मृत व्यक्ति के परिवार से संबंधित व्यक्ति को ही शोकभावना प्रत्यक्षानुभूतीत आनेवाली वातावरण निर्मिती करना आवश्यक है। विद्यार्थी, सहकारी कलाकार, ऐसे समय पर बहुत ही भावना विवश एवं शोकसंविग्न हुए नजर आते है। उस समय उनके भावनों का समझे। मृत व्यक्ति की सेवा करनेवाला सेवकभी दु:ख से भावना विवश होता है उनका भी समावेश शोकसभा के आयोजक अवश्यक करे।

उस कारण मृत व्यक्ति से कही पर भी कमतरता की भावना उत्पन्न नही होती।

धार्मिक प्रार्थना -

शोकसभा के आयोजक मृत व्यक्ति जिस धर्म का प्रतिनिधीत्व कर रहे हो उस धर्म का विशेष प्रार्थना की ऐसे समय आयोजन करे।

धर्म व्यक्ति जीवन एवं समाजजीवन को प्रेरणा देनेवाला घटक है। उस कारण धार्मिक प्रार्थना का औचित्य योग्य होगा।

मृत व्यक्ति के धर्म भावना संभालने का प्रयत्न होगा।अन्य धर्म बांधवों को भी वे योग्य लगे।

अब धर्म को व्यापक अर्थ से देखने लगे है। समाजधर्म कहकर हम प्रार्थना का गांभीर्य समझते यह धार्मिक प्रार्थना सभी आनेवाली हो। सुलभ, सरल होनी चाहिए। उसका अर्थ सभी को सुख प्रदान करनेवाला हो।

प्रार्थना यह अंत:करण से किहो। जिस कारण ईश्वर को सहभागीयो का कहना सुनना पडे। शोकसभा के आयोजक धर्मभावना ध्यान रखकर यह कार्य करने पश्चात के योग्य लगे। समभाव निर्माण हो सके।

पसायदान -

आता विश्वात्मके देवे। येणे वाग्यज्ञे तोषावे
तोषोनि मज द्यावे। पसायदान हे।।
जे खळांची व्यंकटी सांडो। तयां सत्कर्मी रति वाढो
भूतां परस्परे पडो। मैत्र जीवांचे।।
दुरितांचे तिमिर जावो। विश्व स्वधर्मसूर्ये पाहो
जो जे वांच्छील तो ते लाहो। प्राणिजात।।
वर्षत सकळ मंगळी। ईश्वरनिष्ठांची मांदियाळी
अनवरत भूमंडळी। भेटतू भूतां।।
चला कल्पतरुंचे आरव। चेतना चिंतामणीचे गाव
बोलते जे अर्णव। पीयूषाचे।।
चंद्रमे जे अलांच्छन। मार्तण्ड जे तापहीन
ते सर्वांही सदा सज्जन। सोयरे होतु।।
किंबहुना सर्वसुखी। पूर्ण होऊनी तिही लोकी
भजि जो आदिपुरूखी। अखण्डित।।
आणि ग्रंथोपजीविये। विशेषी लोकी इये
दृष्टादृष्ट विजये। होआवे जी।।
येथ म्हणे श्रीविश्वेश्वरावो। हा होईल दान पसावो
येणे वरे ज्ञानदेवो। सुखियां जाला।।

- संत ज्ञानेश्वर

खरा धर्म -

खरा तो एकचि धर्म।
जगाला प्रेम अर्पावे।।
जगी जे हीन अति पतित
जगी जे दीन पद-दलित
तया जाऊन उठवावे।
जगाला प्रेम अर्पावे।।१।।
जयांना जे अंतरी, रडती
तया जाऊन सुखवावे

जगाला प्रेम अर्पावे।।२।।
समस्ता धीर तो द्यावा
सुखाचा शब्द बोलावा
अनाथा साहय ते द्यावे।
जगाला प्रेम अर्पावे।।३।।
सदा जे आर्त अति विकल
जयांना गांजिती सकल
तया जाऊन हसवावे।
जगाला प्रेम अर्पावे।।४।।
कुणा ना व्यर्थ शिणवावे
कुणा ना व्यर्थ हिणवावे
समस्ता बंधु मानावे।
जगाला प्रेम अर्पावे।।५।।
प्रभूची लेकरे सारी
तयाला सर्वही प्यारी
कुणा ना तुच्छ लेखावे।
जगाला प्रेम अर्पावे।।६।।
असे जे आपणापाशी
असे जे वित्त वा विद्या
सदा ते देतची जावे।
जगाला प्रेम अर्पावे।।७।।

- साने गुरूजी

शोकसभा की प्रसिध्दी -

शोकसभा के प्रसिध्दी हेतू आयोजक को प्रयत्न करने की जरुरत है। विभिन्न समाचार पत्रों के प्रतिनिधी एवं इलेक्ट्रॉनिक मिडीया के प्रतिनिधी इन सभीं को पत्र देकर या प्रत्यक्ष मिलकर शोकसभा को उपस्थित रहे इसलिए प्रयत्न करे।

शोकसभा का आयोजन संदर्भ में पूर्व प्रसिध्दी दे। शोकसभा के बाद विद्वान समूह के लिए कार्य के बारे मे भूमिका व विचार प्रदर्शित करनेवाले विधान, हेतू, वक्तव्ये इन्हे भी मुख्य रुप से प्रसिध्दी दे।

प्रसिध्दी सिर्फ समाज के उपयोग के लिए करे।

जिस व्यक्ती की शोकसभा हम ले रहे है उस व्यक्ति के जीवन कार्य, कर्तृत्व पर उस दिन मृत्यूलेख समाचारपत्र से आए तो वे उपयुक्त रहेगा। मृत्यूलेख लिखना एक शैली है। और वे विद्वान के पास से ही लिखकर ले। काव्यात्मक पंक्तिया लिखकर तस्वीर के नीचे लिखने पर उसेभी योग्य प्रसिध्दी दे।

आयोजक काव्यात्मक पंक्तिया, गद्य वाक्य लिखकर ले और उसकी प्रसिध्दी शोकसभा के समय पर करे।

सामाजिक जीवन मे उत्तम परंपरा का प्रयत्न करे। शोकभावना समूहभावना एकता राष्ट्रीय भावना आदि को ध्यान लेकर शोकसभा की प्रसिध्दी करना आवश्यक है।

प्रसिध्दी से अभिनिवेश न रखते हूए समय व शांतता से सहकार्य हो। ऐसी अपेक्षा यह व्यक्त करते है।

❑❑❑

६. शोकसभा आयोजन संदर्भ के कुछ पारंपरिक संकेत

मृतात्मा के सिवा जीवात्मा -

शोकसभा का आयोजन,संयोजन व सूत्रसंचालक मृतात्मा रह शब्दप्रयोग ना करे। हिंदू धर्मशास्त्र के नुसार आत्मां मृत नही होते। वे अमर है, अविनाशी है, ओज है। इस कारण मृतात्मा ऐसा शब्द शोकसभा मे प्रयोग ना करे।

मृतात्मा के लिए जीवात्मा शब्द प्रयोग करे। जीव मे समाविष्ट आत्मा चला जाता है। इस कारण देह निचेष्ट होता है। चेतना निकल जाती है। व्यक्ति मृत होता है। इस कारण उसका जीवन में आत्मा ऐसा शब्दप्रयोग करे। प्राण निकल जाने पश्चात शेष कुडीपर अंत्यसंस्कार करते है। जीवात्मा में आत्मा होता है। इस कारण आत्मा को जल अर्पण करना, अंग्नि देना ऐसे विधी हम करते है।

जीवात्मा को शांती मिले, समाधान मिले, जीवन्मुक्त व्यक्त हो यह विधी के पुरा करने का हेतू होता है।

स्वागत वर्ज्य -

शोकसभा आयोजक स्वागत को वर्ज्य करे। स्वागत समारंभ ना ले। मंचपर अध्यक्ष से लेकर अन्य सभी अतिथी कितना भी नामांकित हो उनका स्वागत पुष्प, श्रीफल, शाल देकर ना करे।

शाब्दिक रुप से स्वागत ना करे, स्वागत गीत गाना आदि, परंपरागत बातों को कार्यक्रम मे ना ले।

स्वागत हेतू सुख समारंभ होना चाहिए। यह समारोह दु:खद है इसका ध्यान रखे। इस कार्यक्रम को अनेवाले अतिथी भी स्वागत हेतू उत्सुक नही होते। सच तो यह है की उच नीचता ना रखे और समानस्तरपर आकर शोक व्यक्त करे। उस समय स्वागत की जरुरत नही है।

आयोजक स्वागत कम करे। वे इस कार्यक्रम के लिए योग्य नही है इस कारण ध्यान रखे।

धन्यवाद ज्ञापन -

शोकसभा कार्यक्रम हेतू आए हुए किसी का भी धन्यवाद ना करे। आयोजक मंचपर हो तो धन्यवाद ना कहे। संयोजक रुप से मृत व्यक्ति के पत्नीने, पुत्र, बेटी भी धन्यवाद ज्ञापीत ना करे।

सूत्रसंचालक कार्यक्रम के अंत मे प्रार्थना गीत आयोजित करे। कार्यक्रम समाप्त हुआ आप आए आपका धन्यवाद ऐसे वक्तव्ये ना करे। शोकसभा जैसे दु:खद कार्यक्रम के दौरान उपस्थिती हेतू धन्यवाद कहना अच्छा नही होता। इस कारण आयोजक, संयोजक, सूत्रसंचालक इन्होंने यह ध्यान रखे।

ऐसी बाते ना करे -

लेखक	:	वर्गणी हेतू कैसे आए थे ? प्रकाशन हेतू कैसे आए थे ?
कवी	:	कवी संमेलन रखने कहा था। पुरस्कार हेतू मैने ही माँग की थी।
समाजसेवक	:	मैने ही पैसे दिए थे इसकारण।
राजनेता	:	मैंने ही वार्ड में से चुनकर दिया।
कलाकार	:	कोई काम नही दे रहा था।
डॉक्टर	:	उनकी प्रॅक्टीस नही चलती थी।
महाराज	:	वे हमारे साथ खेलते थे।

गलतियाँ ना करे -

शोकसभा लेना आयोजक पर आयोजकत्व हमेशा नही आनेवाला इसकारण पहले से ही गलतियां कम करे। गलतियां मंचकी रचना, कार्यक्रम नियोजन, इसमे हो

सकते है। मंचपर भावनिकता, से शोका वेग मे कभी कभी गलतियां कर सकता है। वो भी इसका ध्यान रखे।

सूत्रसंचालक गलतियां ना करे। अगर हूई है तो पुनः पुनः क्षमस्व का उच्चारण ना करे।

सहभागी व्यक्ति भी गलतियां समझकर कार्यक्रम को आगे लेकर जाए। आयोजक से सभी वक्ता, सूत्रसंचालक, सहभागी, श्रोता, कार्यकर्ता, स्वयंसेवक, आदि सभी गलतियां ना करे और कार्यक्रम मे यशस्वी सहभाग ले।

गडबडी ना करे -

शोकसभा आयोजक आयोजन मे कही गडबडी ना हो इसका ध्यान रखे। गडबडी मे ये रहा वो बाकी है। मंचपर व्यक्तियों को बीच मे ही बुलाना ये सारी बाते आयोजक ना करे।

गडबडी के कारण नियोजन बिगड जाता है। सूत्रसंचालक यह बात ध्यान मे रखे। मंचपर, मंच के पीछे, सामने कही पर भी गडबड ना हो इसका ध्यान रखे। कभी कभी गडबडी के कारण शोकसभा अपेक्षित परिणाम साध्य नही करती। इस कारण बाजार, भीडभाड का रस्ता पे शोकसभा का आयोजन ना करे। शांततामय परिसर वहां सभागृह या कार्यालय देखकर ही शोकसभा आयोजित करे।

प्रतिमादर्शन समय लोग किसी भी प्रकार की गडबडी ना करे इस की ओर ध्यान रखे। मंच की व्यवस्था अच्छी हो तो दर्शन अच्छा हो सकेगा। सभागृह मे अपेक्षा से ज्यादा लोग भी आ सकते है उस हेतू आसन व्यवस्था करना आवश्यक है।

आयोजक का यह ध्यान रहे की कही पर भी गडबडी ना हो इतना ही अपेक्षित है।

विनोद ना करे -

शोकसभा मे विनोद ना करे। क्योकी शोक और हास्य यह दोनो भावना परस्परविरोधी है। शोकसभा के आयोजक वक्ता को इसका ध्यान करके दे। जिससे शोकसभा में गडबडी ना हो।

कोई ऐसा प्रश्न करेगा की अगर मृत व्यक्ति विनोदी स्वभाव की होगी, वक्ता विनोदी होगा इस समय में क्या करे ? किंतू मृत व्यक्ति का विनोद यह क्षेत्र हो तो भी वक्ता ने जीवन चिंतन करनेवाले विनोद ही शोकसभा मे प्रकट करे।

विनोदों का ज्ञान रखनेवाले और जीवन चिंतनक्षम विनोद यह निश्चित ही

मर्मग्राही होते है। वे वक्ता आधोरेखित करे। शोकसभा का गांभीर्य नष्ट हो ऐसे विनोद ना करे।

आयोजक को पूर्वसूचना दे के शोकसभा मे विनोद वर्ज्य है। जिस से कारण शोकभावनाओं को प्राधान्य दे सकते है।

तालीयाँ ना बजाए -

शोकसभा मे तालियाँ ना बजाए। क्योकि तालियाँ यह आनंद का द्योतक है। इस कारण तालियाँ यह कृती ना करे। शोकसभा मे दु:खद भावना जागृत रखी जाती है। इन भावना का विरोधी तालियॉ है। इस कारण शोकसभा मे तालियाँ ना बजाए। आयोजक इसकी सूचना संक्षिप्त मे बताऐ।

शोकसभा के आयोजक इन सारी बातों कि ओर ध्यान देना आवश्यक है। कार्यकर्ता, स्वयंसेवक एवं अतिउत्साही मंडल इन्हे इससे दूर रखे। इस कारण निर्देश किया है।

आभार ज्ञापित ना करे -

शोकसभा पूर्ण होने पर जिस प्रकार से आभार ज्ञापित करने है वैसा यहा ना करे। शोकसभा हेतू उपस्थित सभी अंत:करण से यहा उपस्थित हे। इस कारण औपचारिकता ना करे।

शोकसभा आयोजक इसका ध्यान रखे। क्यों की हम आभार व्यक्त कर शोकसभा के गांभीर्य को तो चेतावनी ना दे रहे है।

शोकग्रस्त कुटूंब, संस्था, संघटना इन्हे भी वे अच्छा नही लागे इसकी दक्षता ले। और सभी की ओर से बंधुता का भाव अपेक्षित है।

भारतीय संस्कृती मे स्मशान या अंत्ययाञा मे सभी बांधव होते है। इस आधार से आभार क्यो कहे ? आभार प्रदर्शन औपचारिक भाग कम करे। ऐसी सूचना यहा देना उचित है।

भ्रमणध्वनी बंद करें :-

शोकसभा के कार्यक्रम में सभी अपना दूरभाष बंद रखे। कार्यक्रम के पहले ही सूञसंचालक नम्रता से विनंतीपूर्वकता से सूचना सभी को कहे। दूरभाष के कारण अंत्यत तीव्रता से शांतता भंग होती है। शांतता प्रस्थापित करने हेतू इस सूचना की जरुरत है।

वक्तां, सहभागी, समूह, आयोजक, सहायक आदि सभी को यह सूचना मत पालन करें।

दूरभाष बंद रखना आवश्यक है। शोकसभा कार्यक्रम दुख:द एवं स्मृतीपर होने कारण मूल्यभान सभी रखे। और सूचना का पूर्णत: पालन करे।

अनुशासन :

शोकसभा कार्यक्रम साधारणत: एक से दो घण्टो तक चलनेवाला है। आयोजक उसमे अनुशासन रखे यह आवश्यक है। गंभीर, शोकानुकूल, भावनात्मक एवं श्रध्दा ऐसे होनेवाला कार्यक्रम उतना ही शिस्तता, संयमी एवं शांततामय वातावरण मे हो उस हेतू आयोजक कार्यकर्ता की तत्परता होनी चाहिए।

माईक का स्टॅण्ड हिलाकर उपर नीचे करना आदि काम करने हेतू इलेक्ट्रिशियन, ध्वनीव्यवस्थापक करनेवाले तंत्रज्ञ, वाद्यवृंद ऐसे सभी अनुशासित हो।

अपेक्षा न रखते हुए सभी साधनों की एवं सुयोग्य व्यक्ति की और कार्य का स्वरुप देकर कही पर भी गडबडी ना होगी।

गांभीर्य हम अंत तक रखे। कार्यक्रम पूर्णत: अनुशासित से पूर्ण हो इतनी ही अपेक्षा है। कार्यक्रम के दौरान बीच मे ही अमर रहे, जिंदाबाद ऐसी घोषणा ना दे। यह सभी बातें कार्यकर्ता, स्वयंसेवक, कुटूंबीय इष्ट सभी को सीचकर ही अनुशासित रखे। कुछ लोग केवल प्रसिध्दी हेतू यह करते है और कार्यक्रम की गंभीरता भूलते है। इसके हेतू आयोजक ध्यान रखे। वही सच अनुशासन होगा।

व्यक्ति से समाज महत्वपूर्ण -

शोकसभा के कार्यक्रम मे आयोजक से लेकर सभी वक्ता एवं सर्वसामान्य व्यक्ति भी मृत व्यक्ति की मर्यादा ध्यान में रखते हुए सामाजिक कार्य का हित ध्यान रखे।

शोकसभा सहभागी व्यक्ति उन्हेांने व्यक्तिगत जीवन के अनुभव कथन ना करे। समाज उपयोगी, मार्गदर्शक अनुकरणीय, अनुसरनीय ऐसे ही अनुभवों का कथन करे। वक्ता शोकसभा में जिम्मेदारी से बात करे। जिन अनुभवों से नई पिढी को नये संकेत प्राप्त हो वही व्यक्त करे।

समाज के हित में बाते बताऐं, मृत व्यक्ति के कर्तृत्व से भव्य, दिव्यता प्राप्त होगी। कभी कभी मृत व्यक्ति के स्वभाव वर्णन करते हुए हंसी आ जाए ऐसे विधान न करे। मृत व्यक्ति के जीवन संबंधित विनोदवर्णन ना करे।

सामाजिकता की गंभीरता सभी लोकपरंपरा से, रीतिरिवाज से एवं विचारपूर्वक विवेकनिष्ठता से करे उससे शोकसभा परिणामकारक होगी।

मनुष्य जीवन में शांतता को मृत्यू पश्चात शांतता मिलना आावश्यक है।

अशांत मनुष्य को सुख कैसे प्राप्त होगा ? शांती का अर्थ हमें समझ लेना आवश्यक है। उसकी जरुरत सभी को है।

शांती का अर्थ कहते हुए संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर कहते है -

"जेथ शांतीचा जिव्हाळा नाही।
तेथ सुख विसरोनि न रिघे काही।
जैसा पापियाच्या ठायी।
मोक्षु न वसे।।"ज्ञाने. अ.२, ओवी ३४५

संत तुकाराम महाराज भी अपने पंक्तियों से शांती सुख वर्ण न कहते है -

शांतीपरते नाही सुख। येर अवघेचि दु:ख।।१।।
म्हणऊनि शांती धरा। उतराल पैलतीरा।।२।।

हरिपाठ विवरण - ग्रंथ में वाड्मय विवेचन करते हुए ह.भ.प.धुंडामहाराज इन्होंने शांती का अर्थ व्यक्त करते हुए शांती प्राप्त करने हेतू देह के निश्चलता की आवश्यकता व्यक्त कर जो पुरुष सभी इच्छाओं का त्याग कर निरिच्छ ममत्वरहिती एवं अहंकाररहित होकर संचार करता है उसे शांति प्राप्त होती है। और वे सार्थक है।

शांती की परिभाषा में माऊली कहते है -

तरी गिळोनि ज्ञेयाते।
ज्ञाता ज्ञान माघौते।
हारपे निरुते।
ते शांती गा।।अ.१६, ओवी १३७

आगे कहते है -

तैसी ज्ञेया देता मिठी।
ज्ञातृत्वही पडे पोटी।
मग उरे तेंचि किरीटी।
शांतीचे रुप।।अ.१६, ओवी १४०

सभी परिभाषा शांती का महत्व एवं स्वरुप कथन करते है। संत एकनाथ महाराज भी -

देही स्फुरेना देह अहंता।
विराली कामक्रोध सलोभता।
हे शांती बाणे भाग्यवंता।
मुख्य शांतता या नाव।।ए.भा.१४-१७२

ऐसी शांतता की परिभाषा की है। ऐसी शांतता, गांभीर्य शोकसभा में आए इतना ही अपेक्षित है।

सांकेतिकता -

शोकसभा आयोजक सांकेतिकता का प्रयोग अनेक स्थानों पर कर सकता है। सूचकता, सांकेतिकता इसकारण जो कहने के हेतू बहुत कुछ शब्द बोलने पडते हो तो संकेतो को प्रयोग करे।

विज्ञापन, बॅनर, पत्रिका, मंचपर का बॅनर ऐसे सभी स्थानों पर कर्यकर्ता से मृत व्यक्ति के क्षेत्र से संबंधित संकेतो का उपयोजन कर सकते है।

सांकेतिक संदेशो से नई पिढी का स्मरण होता है। उन पर भावपूर्ण संस्कार होते है। इस कारण संकेतो को महत्व दे सकते है।मृत व्यक्ति का क्षेत्र उनके संबंधित भावव्याकुलता भावनांओ को मूर्त रुप देने का कार्य ऐसे संकेत बध्द कर सकते है। शोकसभा के आयोजक ऐसे संकेत हेतू रसिक, विद्वान, विचारी एवं सामाजिकता के ज्ञानी, कलाकार का सहकार्य ले सकते है।

शोकसभा संबंधी आनेवाली समस्या -

आयोजक शोकसभा के उत्पन्न समस्या को हल करे यह सोचकर रहे। अध्यक्ष यां प्रमुख अतिथी अंतिम समय पर उपस्थित ना रहे तो उनके स्थान पर प्रतिभासंपन्न व्यक्ति के स्थान / जिम्मेदारी पूर्ण कर सके जिससे समस्या सुलझ सके।

बिजली के जाने के कारण शोकसभा अच्छी तरह से पूर्ण होने हेतू पहले ही प्रयोजन करें, बॅटरी जनरेटर की व्यवस्था करे।

शोकसभा मे मृत व्यक्ति के पास के व्यक्ति को भावना के कारण चक्कर आ सकती है। इसकारण मंचपर पाणी की व्यवस्था करे।

शोकसभा में दु:खावेग के कारण बोलते समय संयम रखे। शोकसभा में कभी कभी संभाषण का भान रहता नही। इस कारण उन्हें रोकने हेतू सामने प्रौढ एवं अधिक संपन्न व्यक्ति बैठे जो कि सांकेतिकता से उन्हे रोक सके।

आयोजक इसके सिवा समय, प्रसंग, औचित्य सभी का तालमेल रखकर समस्या को सुलझाए।

❑❑❑

७. उपसंहार

शोकसभा स्वरुप और पध्दती इस विषयपर ग्रंथलेखन करते हुए साधरणत: शोकसभा आयोजन को कुछ दिशा मिले, आवश्यक क्या है , इन बातों की चर्चा हो इस कारण ग्रंथलेखन किया है।

प्रस्तावना मे अध्याय एक प्रारंभ कर शोक प्रकटकरण के बारे में सामाजिक एवं धार्मिक संकेतोकी चर्चा की है। यह चर्चा उदाहरण के साथ हो इस हेतू संत एकनाथजी कां भावार्थ रामायण के शोकवर्णनाओं का सोचविचार किया। शोकसभा आयोजन करना यह नैतिक कर्तव्य है। अपनी और मृत्युविषय हमेशा अनेक मान्यवरोंने चिंतन किया है। गीता में मृत्यु के उत्तम काल की चर्चा कर मृत्यु विधी की संक्षिप्त रुप में चर्चा की है। प्रस्तावना के इस अध्याय में शोकसभा की पार्श्वभूमी ध्यान आए इस कारण शोकसभा का महत्व एवं परिणामकारकता व्यक्त की है।

अध्याय दुसरा के अंतर्गत शोकसभा के विविध कोशसंगत अर्थ देख शोक कि विभिन्न परिभाषा देखे है। मृत्यू का सत्यत्व व्यक्त किया है। स्मशान भूमी की चर्चा की है। भक्त को शोधक नही यह विचार प्रकट किया है। शोकसभा का कालावधी कितना एवं कैसा हो इस विषय पर चर्चा की है।

मृत्यूलेख विषयी संक्षिप्त चर्चा कर एक सामान्य मृत्युलेख प्रस्तुत लेखक द्वारा लिखित है। शोक संकल्पना स्पष्ट कर शोकसभा की जरुरत स्पष्ट की है। मृत्युपश्चात की मानव कार्य करते रहे इस विषयपर चर्चा की है।

तृतीय अध्याय मे शोकसभा का स्वरुप एवं अंतरंग व्यक्त करने का प्रयास किया है। शोकसभा किसकी, आयोजन के नियम , अध्यक्ष, शोकसभा चित्रीकरण, ध्वनिमूद्रण, पत्रिका, विज्ञापन, बॅनर आदि की चर्चा की है। शोकसभा प्रत्यक्ष संचालन करनेवाले संचालक का विचार संक्षिप्त मे किया है। शोकसभा का निवेदन कैसे करे आदि चर्चा प्रस्तुत अध्याय मे हुई है।

चतुर्थ अध्याय मे शोकसभा का इतिहास और परंपरा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इतिहास परिपूर्ण नही है यह प्रस्तुत लेखक को जानकारी है। एक इतिहास लेखन का प्रयास है और वे कितना यशस्वी हुआ है वे वाचक पर निर्भर है।

शोकसभा के व्यक्तिदर्शन कर्तृत्व प्रकटीकरण, जिम्मेदारी, अखंडीत सावधानता, आत्मा का वर्णन, संत तुकारामजी व अभंग, शोक व्यक्त करनेवाला ऐतिहासिक पत्र एवं शोकसभा का स्थुल इतिहास इसका विवेचन किया है।

अध्याय पांच मे शोकसभा आयोजन संदर्भ मे कुछ संकेत व्यक्त किए है। मृत आत्मा के बदले जीवात्मा, स्वागत वर्ज्य, आभार ज्ञापन, विनोद, तालियाँ, नही ऐसे कुछ संकेत व्यक्त कर शोकसभा में आनेवाली समस्या पाठको को वे समस्या निश्चित पथदर्शी होगी ऐसा विश्वास है।

प्रकरण सात यह उपसंहार का है संपूर्ण ग्रंथ का संक्षिप्त उपसंहार यहा किया है।

इस ग्रंथ के परिपूर्ण हेतू कुछ परिशिष्ट संलग्न किए गए है। जैसे की मृतवार्तापत्रलेखन कैस करे, अंतविधी कैसे करे। निमंत्रण कैसे हो, गृह संस्कार सूचन कैसे हो आदि से कुछ शोकसभा आयोजकको निश्चित लाभ होगा।

प्रस्तुत अभ्यास विषय अनेक संदर्भसाधनो की मदद से परिपूर्ण करने का प्रयास प्रस्तुत लेखकद्वारा हुआ है। ऐसे विषय संबंधी ग्रंथशरणगत आवश्यक होती है। इसकारण यहा संदर्भ ग्रंथ सूची अत्यंत नम्रतापूर्वक उन ज्येष्ठ लेखको का ऋण व्यक्त कर साथ संलग्न किए है। वे अभ्यासक हेतू वाचक और संशोधक हेतू एवं विद्यार्थी हेतू निश्चित मार्गदर्शक होगा ऐसा विश्वास है।

❑❑❑

परिशिष्ट - १

मृतवार्तापत्र लेखन

स्थान _____

दिनांक - / /

सूचित करने को दु:ख होता है की, श्री_____, इन्हे दि. / / रोज _____ इस दिन _____, प्रात्:काल /दोपहर / संध्या / रात्रौ / उत्तररात्रौ देवाज्ञा हुई | इनका दु:खद निधन हुआ | उनका अंतिम संस्कार _____ इस दिन किया गया |

दु:खांकित

_____

परिशिष्ट - २

श्रीमान _____

आपको सूचित करने में दु:ख होता है की,
हमारे पिताजी पांडुरंग विठोबा नेहरकर
इनको शनिवार दि.२३/१०/२०१० के दिन सुबह ५:३० को
देवाज्ञा हुई |
उनका
दशक्रिया विधी
मित्ती अधिक कृ. १० शके १९३२ सोमवार दि.१/११/२०१०
रोज श्रीक्षेत्र पंढरपूर यहाँ होनेवाला है
दु:खाकित
श्री.जाणु पांडुरंग नेहरकर
रा.कुटेवाडी, तहसिल पाटोदा, जि.बीड
स्थान : श्रीक्षेत्र पंढरपूर, ता.पंढरपूर, जि.सोलापूर

परिशिष्ट - ३

श्रीमान _____

आपको सूचित करने में दु:ख होता है की,
हमारी माताजी पारुबाई रंगनाथ कदम
इन्हे बुधवार दि.१९/०९/२०१२ के दिन सुबह ५:३० को
देवाज्ञा हुई |
उनका
गंगापूजन का कार्यक्रम
मित्ती नि. भाद्रपद कृ.०२ शके १९३४ मंगलवार दि.०२/१०/२०१२
रोज दोपहर सौंदाना यह होनेवाला है |
दु:खाकित
श्री.अण्णासाहेब रंगनाथ कदम
रा.कुटेवाडी, तहसिल पाटोदा, जि.बीड
स्थान : सौंदाना, तहसिल पाटोदा, जि.बीड

परिशिष्ट - ४

श्रीमान _____

आपको सूचित करने में दु:ख होता है की,
हमारी माताजी प्रयागाबाई भिमराव पुरी
इन्हे बुधवार दि.२६/०९/२०१२ को देवाज्ञा हुई |
उनका
तेरह दिन का कार्यक्रम
मित्ती नि. भाद्रपद कृ.०८ शके १९३४
मंगलवार दि.०८/१०/२०१२
रोज दोपहर तांबाराजूरी यहा होनेवाला है |
दु:खांकित
अरुण भिमराव पुरी
गोविंद भिमराव पुरी
बाळू भिमराव पुरी

फोटो

परिशिष्ट - ५

श्रीमान _____

आपको सूचित करने में दु:ख होता है की,

हमारी माताजी गं.भा.शशिकलाबाई अंबादासराव लांडगे

इन्हे मंगलवार दि.१५/०१/२०१३ को देवाज्ञा हुई।

उनका

गंगापूजन कार्यक्रम

सोमवार दि.२८.०१.२०१३ रोज पाटोदा यह होनेवाला है।

दु:खांकित

श्री.जगन्नाथ अंबादासराव लांडगे

श्री.अशोक पांडुरंग कुडके (नातु)

परिशिष्ट - ६

सरदेशमुख उद्योग समूहके अध्यक्ष श्री. आबासाहेब सरदेशमुख इनका दि.१२ दिसंबर २०१३ के दिन सुबह दु:खद निधन हुआ है। मृत्यूसमयी उनकी आयु ८७ वर्ष की थी।

वे अत्यंत प्रभावी व्यक्तिमत्व एवं शांत, साहसी थे। उनकी यादें सभी को स्मरण रहेगी।

वैकुंठ स्मशान में गुरूवार १३ दिसंबर २०१३ के दिन सुबह ठिक १० को अंत्यसंस्कार होनेवाला है। सुबह ७ से ९ तक उनके पार्थिव का दर्शन ले सकते है।

श्री.आबासाहेब सरदेशमुख इन्हें भावपूर्ण श्रध्दांजली अर्पण करने हेतू रविवार १५ दिसंबर २०१३ के दिन सुबह ११ बजे कै.नानासाहेब सरदेशमुख सभागृह में शोकसभा आयोजित कि है।

शोकसभा सरदेशमुख परिवार को मिलने हेतु शोकसभा को उपस्थित रहे।

- शोकमग्न -

सरदेशमुख परिवार व सरदेशमुख उद्योगसमूह सर्व कर्मचारी व कामगार वृंद।

(आधारभूत संकल्पना दै. सकाळ दि.१३.०९.२०१३)

संदर्भ ग्रंथ

१. श्रीमद्‌भगवतगीता - महर्षी व्यास
२. ग्रामगीता - संत तुकडोजी महाराज
३. सार्थ श्री ज्ञानेश्वरी - संत ज्ञानेश्वर
४. अभंग गाथा - संत नामदेव
५. अभंग गाथा - संत तुकाराम
६. सार्थ श्री दासबोध - संत रामदास
७. व्यावहारिक मराठी - श्री.ल.रा.नसिराबादकर
८. शालेय मराठी शब्दकोश - संपा.रघुनाथ हरी आफळे, रंगनाथ सखाराम वाघमारे
९. सुगम मराठी शब्दकोश - संपा.श्री.ना.बनहटटी, भाऊ धर्माधिकारी
१०. श्री ज्ञानेश्वरी भावदर्शन - ले. वै.शंकरमहाराज कंधारकर
११. श्रीएकनाथी भागवत - संत एकनाथ
१२. राजद्वारे स्मशानेच (लोकसत्तेतील लेख) - डॉ. संजय ओक
१३. नारद भक्तीसूत्रे विवरण - ह.भ.प. धुंडामहाराज देगलूरकर
१४. श्रीमद्‌भागवत - श्री महर्षी व्यास.
१५. मराठी भाषा : विकास, संवर्धन व भाषिक कौशल्य - नरेंद्र मारवाडे - डॉ.सदाशिव सरकटे
१६. मनाचे श्लोक - संत रामदास
१७. प्राचीन मराठी गद्य - संपा.डॉ.शं.गो.तुळपूळे
१८. स्मशानातील भाषणे, मार्मिक - दिवाळी १०१० - आचार्य प्र.के.अत्रे
१९. श्री हरिपाठ विवरण - ह.भ.प.धुंडामहाराज देगलूरकर
२०. गीता प्रवचने - आचार्य विनोबा भावे, म.म.काणेकृत
२१. धर्मशास्त्राचा इतिहास - उत्तरार्ध - अनुवादक, यशवंत आबाजी भट.
२२. व्यवसायभूमुख भाषिक लेखन, माहिती तंत्रज्ञान व प्रसारमाध्यमे - डॉ.भारत हंडीबाग, डॉ.राजकुमार यल्लावाड
२३. उत्कृष्ट सूत्रसंचालन - सारंग टाकळकर
२४. संदेशन प्रक्रिया आणि मराठी भाषा विकास - डॉ. सुभाष बागल, पृ.१०३

२५. माध्यमांची भाषा आणि लेखन कौशल्ये - डॉ. केशव तुपे
२६. उपयोजित मराठी - डॉ.प्रकाश मेदककर
२७. उपयोजित मराठी भाग - १ - डॉ.प्रकाश मेदककर
२८. उपयोजित मराठी भाग - २ - डॉ.प्रकाश मेदककर
२९. व्यवहारिक मराठी : स्वरुप मीमांसा - डॉ. वसंत बिरादार
३०. भावार्थ रामायण - संत एकनाथ महाराज
३१. भाषा आणि संस्कृती - ना.गो.कालेलकर
३२. मऱ्हाटी संस्कृती : काही समस्या - ले.शं.बा.जोशी, संपा.वसंत स.जोशी.

❑❑❑